विश्व पर्यावरण दिवस, यज्ञ दिवस एवं
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

ओ३म्

वेद एवं विज्ञान आधारित अध्यात्म व मानव कल्याण
के लिए समर्पित मासिक पत्रिका

अध्यात्म पथ

वर्ष-17 अंक -180-181 मई-जून-2023 मूल्य : 10/- प्रति

यदग्नये शुचये आयुरेवास्मिन् तेन दधाति।

पवित्र अग्नि में जो आहुति दी जाती है उससे यज्ञ, यजमान को आयु धारण कराता है।

करो यज्ञ और दान यदि सुख पाना है
वेद शास्त्र सब यही बताते ऋषि मुनि भी यही सुनाते।
यज्ञ है सुख की खान। यदि सुख पाना है।

प्रत्येक शुभ कार्य को
यज्ञ के साथ प्रारंभ करो।

२१ जून
योग दिवस

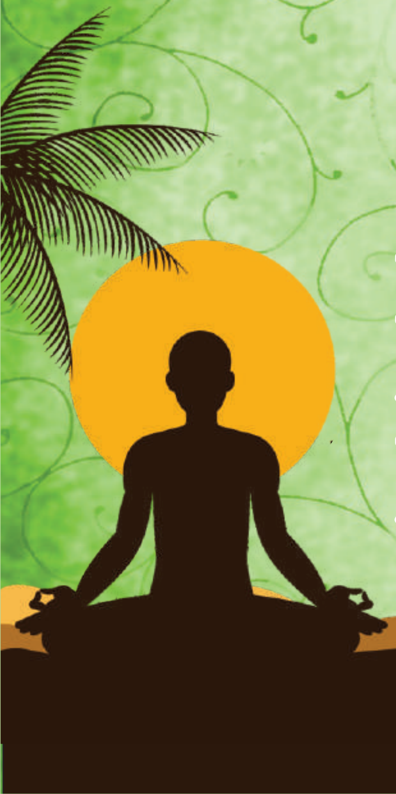

साधक बनकर करो साधना अमृत का भण्डार मिलेगा।
मानव जीवन सफल बनेगा, परमेश्वर का प्यार मिलेगा।।
आसन प्राणायाम के द्वारा स्वस्थ निडर बलवान बनोगे।
करके प्रत्याहार धारणा योगनिष्ठ इन्सान बनोगे।।
अन्तःकरण पवित्र बनेगा शुद्ध सरल व्यवहार मिलेगा।
साधक बनकर......

अध्यात्म पथ मासिक पत्रिका के द्वारा दिल्ली में आयोजित विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ, विराट भजन संध्या एवं सम्मान समारोह की सचित्र झलकियाँ

समारोह के मुख्य अतिथि परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री सत्यानन्द आर्य जी को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित करते हुए आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी, यशपाल आर्य जी एवं श्री सुरिन्द्र चौधरी जी

अमेरिका से पधारे कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. अमरजीत शास्त्री जी को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित करते हुए आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी, श्री यशपाल आर्य जी एवं श्री सुरिन्द्र चौधरी जी

विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ के मुख्य यजमान गण श्रद्धा व प्रेम से आहुति देते हुए

विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य शिवनारायण शास्त्री जी स्वामी आर्य तपस्वी सुखदेव जी एवं आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी

अध्यात्म पथ पत्रिका के संपादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी केशव पुरम, दिल्ली में विशाल जन समूह को संबोधित करते हुए एवं योगी बने, निरोगी बने, उद्योगी बने, उपयोगी बने, सहयोगी बने का संदेश देते हुए

वेद एवं विज्ञान आधारित अध्यात्म व मानव कल्याण के लिए समर्पित मासिक पत्रिका

अध्यात्म पथ

वर्ष-17 अंक -180-181 मई-जून 2023

प्रेरणास्रोत

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती

स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह जी शशि

डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया, डी.लिट्

स्व. श्री विद्यासागर नांगिया

प्रधान सम्पादक

चन्द्रशेखर शास्त्री

प्रबन्ध सम्पादक

अश्विनी कुमार नांगिया

साहित्य सम्पादक

श्री ओम सपरा

सह-सम्पादक

श्रीमती पूनम नांगिया

श्री सूर्यकान्त मिश्रा

डॉ. पूनम सुनेजा

परामर्शदाता

डॉ. पुष्पलता वर्मा, डॉ. अनिल राय

श्री अशोक सुनेजा, श्री यशपाल आर्य

अध्यात्म पथ (मासिक)

WZ-97, सुन्दर पैलेस, ज्वाला हेड़ी मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063

दूरभाष: 42345474, 9810084806

E-mail : adhyatmapath@yahoo.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक चन्द्रशेखर शास्त्री द्वारा एक्स्पो प्रिंट एण्ड मीडिया प्रा0 लि0, 97/12,ज्वाला हेड़ी मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63 से मुद्रित तथा अध्यात्म पथ कार्यालय : WZ-97, सुन्दर पैलेस, ज्वाला हेड़ी मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63 से प्रकाशित

अनुक्रम

विषय	विशेषांक	पृष्ठ
अध्यात्म अमृत-वेद वाणी, गीता का पावन संदेश		4
सम्पादकीय : योग का संदेश: जोड़े और जुड़ें		5
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वी जयन्ती पर विशेष लेख		
सबसे प्रीतिपूर्वक व्यवहार		6-7
परमात्मा की विद्यमानता		8-9
मात्र पूजा नहीं जरूरत है राम के चरित्र को जीवन में उतारने की भी		10-12
यज्ञ, भजन और सम्मान से बढ़ी अध्यात्म पथ की शान		13-15
मानव जीवन मिलना ईश्वर की हम पर सबसे बड़ी कृपा		16-17
घर-घर यज्ञ से पर्यावरण करें शुद्ध व मनोकामना करें पूर्ण		18-19
निरोगी काया में ही सुख		20-22
हहँसना भी जरूरी है सेहत के लिए, समाचार दर्पण		23
भजन वर्षा - प्रभु का सहारा, प्रेम		24
भव्य विशेषांक हेतु विज्ञापन की अपील		25
आर्य समाजों एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं से अपील		26
अध्यात्म पथ सदस्यता आवेदन पत्र		26

कुल पृष्ठ संख्या 28 कवर सहित

समस्त पत्र व्यवहार हेतु नीचे लिखे पते पर ही संपर्क करें।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

(प्रधान संपादक-अध्यात्म पथ)

फ्लैट नं.-C-1, पूर्ति अपार्टमेंट (एफ ब्लाक)

विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 मो. 9810084806

E-mail : acharya_chandrashekhar@yahoo.com

लेखकवृंद-रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर:

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ नं-2	:	3100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ नं-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

अध्यात्म पथ में प्रकाशित रचना में व्यक्त विचार, रचनाकार के अपने विचार हैं। सम्पादक मण्डल का उन विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। न्यायक्षेत्र दिल्ली रहेगा।

अध्यात्म अमृत

वेदवाणी

ओ३म् मोधमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।

नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी॥ ऋग्वे.

अर्थ–जो मूढ़ व्यक्ति मुफ्त का भोजन, बिना कमाया अन्न पाना चाहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी इन भावनाओं से ही मृत्यु को प्राप्त कर लेता है। और अपनी कमाई में से जो न किसी हितैषी, श्रेष्ठ पुरुष का पालन करता है, न अपने मित्र प्राणियों का पोषण करता है उसका ऐसा व्यापार उसके नाश का ही कारण है। जो अकेला खाता है वह पाप खाता है–मैं सत्य कहता हूँ।

महर्षि दयानन्द वचनामृत

कम से कम 25 वर्ष पर्यन्त पुरुष और सोलह वर्ष पर्यन्त कन्या को ब्रह्मचर्य सेवन अवश्य करना चाहिये और अड़तालीसवें वर्ष से अधिक पुरुष और चौबीस से अधिक कन्या ब्रह्मचर्य का सेवन न करे किन्तु इसके उपरान्त गृहाश्रम का समय है।

शेखर वाणी

नदी, झरने सागर की ओर जाते हैं। सागर विराट है और विशाल है। एक बार झरने ने सागर से मिलने से इनकार कर दिया। उसने कहा मैं विराट होकर अगर खारा हो जाऊं, पीने योग्य ना रहूं तो मेरा कोई मूल्य नहीं है। अगर हम सब बड़े होकर समाज के काम नहीं आते तो हमारा बड़प्पन व्यर्थ, हम सबको प्रयास करना चाहिये कि हम भले ही छोटे रहे किन्तु समाज और परिवार के लिए उपयोगी बने रहे।

सोचने की बात

35 सौ फेसबुक दोस्त और 25 व्हट्सअप ग्रुप होने के बाद भी जब उसे हार्टअटैक हुआ तो आई.सी.यू. के बाहर सिर्फ उसकी पत्नी, माँ, बाप और भाई–बहन और बच्चे खड़े थे, जिनके लिए कभी भी उसके पास वक्त नहीं होता था। काल्पनिक दुनिया से बाहर निकलिए और अपने परिवार को वक्त दीजिए। आपके परिवार ही बुरे वक्त में काम आएगा।

गीता का पावन सन्देश

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।

असदित्युच्यते पार्थ न चतत् प्रेत्य नो इह॥

बिना श्रद्धा के किया हुआ कोई भी कार्य फल रहित होता है, श्रद्धारहित कर्म का फल ना इस लोक में मिलता, ना मरने के बाद अर्थात् दूसरे लोक में भी नहीं मिलता। वह कर्म व्यर्थ चला जाता है।

जीवनोपयोगी बातें

➲ पलाश की समिधा सब कामनाओं की पूर्ति करती है।

➲ संतान प्राप्ति के लिए पीपल की समिधा का उपयोग करें।

➲ जो माता पिता और गुरु की जीवित होने पर भी सेवा नहीं करते, वे अनाथ हो जाते हैं।

'अध्यात्म पथ' के आजीवन सदस्यों की सेवा में

वैदिक विचारधारा की अत्यन्त लोकप्रिय मासिक पत्रिका 'अध्यात्म पथ' का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है। किन्तु अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। अध्यात्म पथ आपकी अपनी पत्रिका है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अतः ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1100/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से अध्यात्म पथ भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया आपना नाम पता पिन कोड, सदस्य संख्या तथा मोबाइल नं. अवश्य लिखें।

ड्राफ्ट/चैक/मनीऑर्डर 'अध्यात्म पथ' के नाम से अध्यात्म पथ सम्पादकीय कार्यालय, फ्लैट नं.–सी–1, पूर्ति अपार्टमेंट (एफ–ब्लाक) विकासपुरी, नई दिल्ली–110018 के पते पर भेजें।

अश्विनी कुमार नांगिया, प्रबंध संपादक

सम्पादकीय...

योग का संदेश: जोड़ें और जुड़ें

प्रिय पाठकगण! योग शब्द संस्कृत के जिस धातु से बनता है उसका अर्थ है जोड़ना या मिलना।

वर्तमान समाज की जो चुनौती है वह विच्छेद की है अलग होने की है। समायोजन संतुलन के अभाव की है। शरीर मन और आत्मा के बीच संतुलन का अभाव है इसी कारण बहुत सी परेशानियां मानसिक बीमारी का रूप ले रही है।

पारिवारिक जीवन भी संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। मोबाइल के युग में हम दो हमारे दो से ज्यादा हम चार और हमारे 4 मोबाइल हो गया है। मोबाइल दुनिया को मुट्ठी में करने के लिए आया था किंतु हम खुद मोबाइल की मशीनों में बंद हो गए हैं।

योग का अर्थ है सेतु बनाना। परिवार के सदस्यों के बीच शरीर मन और आत्मा के बीच, परिवार और समाज के लिए व्यक्ति और राष्ट्र के बीच, योग को स्थापित करने से समस्याओं का समाधान हो सकता है।

हमें समस्या है कि परिवार के सदस्य हमारी बात नहीं सुनते किंतु कटु सत्य है कि हम भी किसी की नहीं सुनते। जो दूसरों की नहीं सुनता उनकी बात दूसरे भी नहीं सुनते। जो एक प्रक्रिया है जो एक दर्शन है। योग सिर्फ आसन नहीं है योग के आठ अंग बताए गए हैं जिसमें अंतर्मन के विचार भी समाविष्ट है। योग हमारे जीवन की सभी समस्याओं का समाधान कर सकता है। योग का अर्थ है जोड़। मैथ्स की भाषा में प्लस। जहां प्लस होता है वहां वृद्धि होती है बढ़ोतरी होती है। आज जीवन में उत्साह उमंग आनंद की कमी है। तमाम संसाधनों के बावजूद हम नाखुश हैं।

हमें ऐसा परिवार और समाज बनाना होगा जिसमें योग हो जुड़ाव हो। एक दूसरों को सहने सुनने समझने की शक्ति हो। सभी पारिवारिक मूल्य स्थापित हो सकेंगे। यह सांस्कृतिक सामाजिक और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी करना आवश्यक हो गया है।

यज्ञ को दुनिया का श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है। यज्ञ में जहां पहले स्थान पर देवपूजा है वहीं दूसरे स्थान पर संगति करण है जिसका अर्थ है मिलना मिलाना और संगति करना। योग की मूल धारणा को आत्मसात किए बगैर कोई यज्ञ सफल नहीं हो सकता। बिना जुड़ाव के दान की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

योग दिवस पर हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने जीवन का मूल्यांकन करें कि हम प्लस की ओर बढ़ रहे हैं या माइनस की ओर बढ़ रहे हैं। हमारी खुशी ऊपर जा रही है या नीचे आ रही है। जीवन के आनंद का ग्राफ ऊपर चल रहा है या नीचे उतर रहा है। गीता ने समत्व को योग कहा गया है। जीवन को स्थिति परिस्थिति से ऊपर उठाकर हमेशा आनंदित रखने का विज्ञान योग है।

आजादी के अमृत काल के इस दौर में राष्ट्र नई करवट ले रहा है। ऐसे में राष्ट्रवादी शक्तियों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। हम आसन प्राणायाम करने के साथ-साथ योग के मूल भाव को भी समझें और स्वयं जुड़े और दूसरों को जोड़ें।

विश्वपर्यावरण दिवस पर ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाने का संकल्प लें, वृक्षों से वायु एवं वायु से आयु प्राप्त होती है। यज्ञ जरुर करें, यज्ञ से रोग दूर होकर आरोग्यता प्राप्त होती है। यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एवं सुगन्धित होता है।

-चन्द्रशेखर शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की २००वीं जयन्ती पर विशेष लेख

सबसे प्रीतिपूर्वक व्यवहार

-डॉ. अजय आर्य
प्रसिद्ध चिंतक एवं विचारक छत्तीसगढ़ मो.: 9300540698

महर्षि दयानंद का चिंतन लौकिक और पारलौकिक दोनों ही दृष्टि से बहुत ही अनूठा था। स्वामी जी न केवल शास्त्रीय चिंतन में ही पैठ रखते थे अपितु वे लौकिक तथा व्यावहारिक कौशल के मूल दृष्टिकोण को समझते थे । उनकी पुस्तक 'व्यवहार भानु' का प्राय: बहुतों ने अध्ययन किया होगा । यह बात मेरी समझ से परे है कि सोलह सोलह घंटे की समाधि का आनंद लेनेवाले महर्षि दुकानदार और ग्राहक के पचड़े को अपनी कलम से उभारने का अवकाश कैसे प्राप्त करते थे । व्यवहार भानु में जीवन की बहुत सी ग्रंथियों को सुलझाने का प्रयास किया है । स्वामी जी के प्रत्येक ग्रन्थ अपने आप में सम्पूर्ण तथा अनेक दृष्टि से चिंतनीय हैं । हमारा सारा जोर साधारणत: **सत्यार्थ-प्रकाश** के पठन-पाठन में ही सीमित होने लगा है । सत्यार्थ-प्रकाश का कलेवर तथा उसका मुख्य आशय सामान्य व्यक्तियों की पहुँच से बाहर हो जाता है । इसके भावों को समझना और पढ़ना सबके लिए आसान नहीं है ।

'स्वामंतव्यामंतव्यप्रकाश' 'व्यवहार-भानु' अथवा आर्यसमाज के नियम स्वामी जी की दूर दृष्टि का ज्वलंत प्रमाण हैं । इसका अध्ययन सबके लिए हितकर तथा लाभदायी हो सकता है । स्वामी जी ने आर्यसमाज के सातवें नियम में लिखा है कि-

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए ।

यह सातवां नियम आर्यसमाज ही के लिए नहीं अपितु प्रत्येक सामाजिक संस्थान के उत्कर्ष के लिए आवश्यक है। आज आर्यसमाज की जो दुर्गति हो रही है, वह इसी नियम के अभाव में हो रही है । मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह साधारण सा वाक्य हमारे जीवन को असाधारण बना सकता है । महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्धारित आदेश में जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों को संजोने की कोशिश की है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाजियों के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक मानव के लिए इस नियम को उपदिष्ट किया था, ऐसा इसके उपदेश पर चिंतन करने से प्रतीत होता है।

आर्यसमाज के नियम आर्यसमाज मात्र के लिए नहीं है। ये नियम हर उस व्यक्ति के जीवन में प्रकाश का संचार करेंगें जो अपने जीवन में आर्यत्व (श्रेष्ठत्व) का संचार करना चाहते हैं। महर्षि ने मानवीय व्यवहार के तीन पहलूओं पर ईशारा किया है । इसे हम व्यवहार के तीन चरणों के रूप में भी स्वीकार कर सकते हैं- प्रीति, धर्म और यथायोग्य ।ये व्यवहार के तीन आधार हैं । मुझे स्मरण आता है कि जब योगेश्वर श्रीकृष्ण ने दुर्योधन का मेवा-मिष्ठान्न ठुकराया तब उन्होंने कहा था कि व्यक्ति किसी और के घर दो ही कारणों से भोजन करता है । पहला कारण प्रीति है दूसरा कारणविपत्ति अथवा संकट में होना है। कृष्ण जी ने कहा कि प्रीति तेरे मेरे बीच में नहीं है और विपत्ति मुझ पर नहीं है फिर भोजन कैसा ?

सम्प्रीत्यन्नानि भोज्यानि आपद्भोज्यानि वा पुन: ।
न च सम्प्रीयसे राजन् न चौवापद्गता: वयम्॥

प्रेम दुनिया का सबसे अनमोल तोहफा है। इसका मूल्य स्वामी जी समझते थे। अक्सर हम स्वामी जी के सभी उपदेशों को मात्र तर्क की ही दृष्टि से देखते हैं। इसलिए बहुधा हम वाक्यों के रहस्यार्थ को समझने से चूक जाते हैं । स्वामी जी का चिंतन बहुत ही व्यापक है । इसमें तर्क, सत्य, प्रेम, व्यवहार, धर्म तथा मनोविज्ञान सब पर पर्याप्त दृष्टि डाली गई है। रहीम ने प्रेम का मूल्य स्वीकारते हुए कहा है-

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय
तोड़े से फिर न जुड़े , जुड़े गांठ पड़ जाए ॥

रहीम का मानना है कि सभी को प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए । प्रेम जोड़ता है और घृणा तोड़ती है । तर्क को भी इस दृष्टि से विचारकों ने 'आरी' कहा है । आरी भी काटने का काम करती है । तर्क, जहाँ असत्य को काटता है, वहीँ कई बार उसकी अधिकता जीवन को शुष्क बनाकर सत्य के रसपान से वंचित भी कर देती है । सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि जैसी कलेवर में बड़ी पुस्तकों को बहुत से विचारकों तथा अध्येताओं ने अपना विचार का केंद्र बिंदु बनाया है । आर्यसमाज के लिए निर्धारित दस नियमों के प्रति उनका ध्यान कभी गहराई से गया ही नहीं अथवा कम गया है । इन नियमों में वैदुष्य की नहीं क्रियात्मक साधना, संयम अथवा व्यवहार की अपेक्षा होती है । बुद्धि से क्रिया अथवा व्यवहार अधिक बलशाली होता है । इन दस नियमों में जीवन को

दिशा देने की पर्याप्त क्षमता है। स्वामी जी के लघु उपदेशों में भी जीवन तथा वेद का सम्पूर्ण निचोड़ है। आर्यसमाज के हनुमान कहे जाने वाले ब्रह्मचारी नंदकिशोर जी ने इस ओर अपनी कलम उठाई है ।

प्रेम का व्यवहार हिंसक से हिंसक पशु को भी विश्वसनीय बनाकर अपने वश में कर लेता है । बुद्ध के प्रेम ने अंगुलिमाल को बदला है, तर्क ने नहीं । जब भी आप व्यवहार के धरातल पर किसी भ्रम में हो महर्षि के इस सन्देश पर दृष्टि डालें, चिंतन करें । महर्षि के अनुसार हमारे व्यवहार का आरम्भ प्रीति से होना चाहिए । प्रेम के बाद आप विचार करें कि धर्म हमें किस व्यवहार की इजाजत देता है । सबसे अंत में यथायोग्य व्यवहार है । आज हम जितनी भी बाते सुनते हैं, उन बातों में बार-बार यथायोग्य व्यवहार का ही उपदेश दिया जाता है । यह यथायोग्य व्यवहार दुष्ट की दुष्टता को और अधिक परिपक्व कर देता है । सज्जनता अथवा सुजनता की रक्षा इस बात से है कि हम अपने व्यवहार में प्रेम और धर्म को स्थान दें । महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन देखिये उन्होंने अपने विष दाताओं के भी बंधन छुड़ाए । स्वामी जी ने अपने विष दाताओं के सामने भी अपनी सहृदयता और परोपकारिता का व्यवहार नहीं छोड़ा । हम छोटी-छोटी बातों को पकड़कर अपनापन ही खो देते हैं।

स्वामी जी ने व्यवहार के तीन चरणों की चर्चा इस छोटे से दिखने वाले नियम में की है । स्वामी जी ने व्यवहार के आरंभिक चरण में प्रीति को रखा है । दूसरे चरण में धर्म को रखा गया है और अंत में यथायोग्य व्यवहार को स्थान दिया गया है । यह एक गहरे रहस्य को प्रकट करता है । आर्यसमाज के नियम वैयक्तिक जीवन के सुधार के साथ-साथ सामाजिक संगठन की दृष्टि से जीवन को उपयोगी बनाने के लिए निर्दिष्ट किये गए हैं । जीवन व्यवहार के लिए प्रीति अत्यंत आवश्यक है । प्रीति सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन को रसपूर्ण तथा प्रभावी बनाती है । प्रीति के अभाव में जीवन शुष्क हो जाता है । जीवन को तरल, सरल अथवा प्रवाहमय बनाने के लिए आवश्यक है कि सबसे सर्वप्रथम प्रीतिपूर्वक व्यवहार किया जाये । यह आर्यसमाज के निर्देशों अथवा नियमों का बहुत ही महत्वपूर्ण पक्ष है ।

हमारा दंभ हमें अपने स्वनिर्मित आभामंडल से बाहर नहीं निकलने देता और हम समाज के लिए कोई उपयोगी कार्य नहीं कर पाते। सामाजिक संगठन सिर्फ वैयक्तिक महत्वाकांक्षा अथवा वैदुष्य के अहम् के सहारे आगे नही बढ़ सकते । अहम् का दीमक संगठन को गर्त में ले जाता है । यह अहम बहुधा हम विद्वान कहे जाने वाले वर्ग से भी नहीं छूटता । हम अपनी विद्वत्ता प्रदर्शित करने के लिए बहुधा मंच से ही पूर्ववर्ती विद्वान की बात को काट करके स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। यह स्थिति बहुधा आयोजकों के लिए भी शोचनीय स्थिति निर्मित करती है। मुझे स्मरण है कि वर्षो पहले मुंबई के एक प्रतिष्ठित विद्वान आर्यसमाज भिलाई में प्रवचन के लिए पधारे थे। उनके पहले गायत्री मन्त्र के महत्व पर एक शास्त्री जी ने व्याख्यान दिया। गायत्री के महत्व को स्थापित करते हुए उन्होंने कह दिया कि गायत्री मन्त्र के जाप से विद्या, धन और सुख की प्राप्ति होती है। शास्त्री जी गुरुकुल के ही स्नातक हैं। विद्वान वक्ता ने मंच पर आते ही कहा कि अभी जो वक्ता कह रहे थे यह बात शास्त्र विरुद्ध है । वेदों में किसी गायत्री मन्त्र का जिक्र नहीं है। गायत्री मात्र छंद है। इस छंद के अनेक मन्त्र वेदों में विद्यमान हैं । इस तरह का भ्रम गायत्री परिवार द्वारा फैलाया जा रहा है। ये वक्ता भी शायद उन्हीं के विचारों से प्रभावित हैं, आदि। जो लोग वहाँ सिर्फ आर्यसमाज को सुनने आये थे उनमें मात्र यही सन्देश गया कि आर्यसमाज के दो विद्वान ही आपस में सहमत नहीं हैं फिर औरों का क्या कहना! पिछले दिनों आर्यजगत के प्रतिष्ठित विद्वान आचार्य **चंद्रशेखर शास्त्री** जी से बात हो रही थी । वे मानते है कि विद्वानों का यह व्यवहार बहुत ही अशोभनीय है । सभाओं में विद्वानों की विद्वत्ता को आंकने की अपेक्षा लोग वेद अथवा महर्षि के विचारों को सुनने तथा समझने आते हैं। विद्वानों को आपसी असहमति पर परस्पर विचार-विमर्श करना चाहिए । व्यर्थ का कलह अहं को पोषित कर सकता है लोक के उपकार को नहीं। विद्वानों को चाहिए कि वे अपनी असहमति को भी विनम्रता के साथ जोड़ने का प्रयास करें। श्रोताओं को प्रेमपूर्ण, सरल और सरस भाषा में वैदिक ज्ञान परोसने की कोशिश की जानी चाहिए। वर्तमान परिवेश में तीखे कटाक्ष और कड़वे वचनों अथवा खण्डन की अत्यधिकता की आवश्यकता नहीं है। अब समाज सकारात्मक, मंडनात्मक और सरस विचारों का ही स्वागत करता है । हमारे पिछड़ने का एक बड़ा कारण यही है की हम खंडनात्मक विचारों को ही अपनी विद्वत्ता का परम प्रमाण मान बैठे हैं। खंडन आवश्यक है किन्तु मात्र खंडन से ही विचारों का प्रचार और प्रसार होगा यह विचार निर्मूल है। जीवन प्रेम, करुणा, सत्य के साथ सहृदयता की भी अपेक्षा करता है ।

क्रमशः

परमात्मा की विद्यमानता

प्रातःकाल उठते ही ध्यान का आनन्द लें

गतांक से आगे....

-बलवीर सिंह चौहान, घरौण्डा
मो.: 9354602556

आर्य समाजों में कार्यक्रमों की समाप्ति के पश्चात् शान्ति मन्त्र का उच्चारण किया जाता है। उसके अन्त में तीन बार ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः शब्दों का उच्चारण इन तीनों तापों के शमन के लिये ही ईश्वर को निवेदित किया जाता है।

यहां मैं एक बात और बताना चाहता हूँ जिसका प्रश्न किसी न किसी जागरूक पाठक के मन में अवश्य चल रहा होगा। वह प्रश्न यह है कि जब परमात्मा दयालु हैं, सर्वव्यापक हैं, सर्वशक्मिान हैं और सर्वान्तर्यामी हैं तो फिर जगत् में अनेक व्यक्तियों के साथ मारपीट होती रहती है, जीवों पर अत्याचार होता रहता है तो वे दयालु प्रभु उन्हें क्यों नहीं बचाते? इसका जवाब यह है कि प्रभु ने सृष्टि में कर्म करने के लिये सबको स्वतन्त्र छोड़ रखा है और उस कर्म के फल का भुगतान करना अपने अधीन ले रखा है। समय आने पर अच्छे–बुरे कर्मों का अच्छे–बुरे रूप में उन द्वारा फल दे दिया जाता है। दूसरी बात यह है कि जैसे किसी विद्यार्थी का पिता अध्यापक है। परीक्षा चल रही है और अध्यापक पिता पर्यवेक्षक (सुपरवाईजर) होने के नाते उस परीक्षा की देख–रेख कर रहा है। वह देख रहा है कि उसका पुत्र कुछ प्रश्नों के उत्तर बिल्कुल गलत लिख रहा है, परन्तु वह अपने परीक्षार्थी पुत्र को उस समय कुछ भी नहीं बता सकता, क्योंकि परीक्षा का ऐसा ही नियम है। तो इसी प्रकार परमात्मा भी गलती करने वाले को उस समय कुछ नहीं कहते क्योंकि सृष्टि चलाने का उनका यह नियम है। यदि वे सबको स्वयं ही बचाने लगें तो सब लापरवाह हो कर मुसीबतों को अपने सिर मंढते फिरेंगे कि चलो परमात्मा ने बचा तो लेना ही है, आ बैल मुझे मार। इसलिये परमात्मा उसी समय दोषी को कुछ नहीं कहते। बाद में दोषी व्यक्ति को उसके कर्म अनुसार फल देने की बात पहले ही कही जा चुकी है। हां परमात्मा पुण्यशाली व्यक्तियों पर सुरक्षा का घेरा अवश्य बान्ध देते हैं। ऐसे व्यक्ति खूब गहरे संकटों से भी इस प्रकार बच जाते हैं जिसे जानकर आश्चर्य होता है। तब कहा जाता है – 'जाको राखै सांईया मार सकै न कोय।'

प्रातःकाल उठते ही ध्यान का आनन्द लेवें

साधकजन निरन्तर अभ्यास करते हुए जब कुछ काल बाद साधना के मार्ग में तल्लीन हो जाते हैं अर्थात् साधना में पक्के हो जाते हैं तो प्रातःकाल ब्रह्ममुहुर्त में वातावरण बहुत शान्त होता ही है तब नींद से जागते ही तुरन्त ध्यान में बैठने को बड़ा मन करता है। बस इस समय को आप मत चूकें। उठते ही पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके खाट पर ही बैठ जायें और तुरन्त अपने नाक के बिन्दु ध्यान केन्द्र पर ध्यान लगाकर जब तक जी चाहे ध्यान में बैठे रहें। स्नान आदि क्रियाएं बाद में करना क्योंकि यह सुनैहरा अवसर फिर स्नानादि क्रियाओं में ही खत्म हो कर रह जाता है और बाद में ध्यान की उतनी बढ़िया बात नहीं बन पाती। इसके पश्चात् अपनी नित्य की स्नान आदि क्रियाएं पहले की तरह ही करें। या फिर ऐसा करें कि आपका ध्यान–उपासना कार्य तो नींद से उठते ही चालु होकर निपट चुका है, अब स्नान के पश्चात् आप सन्ध्या कर सकते हैं, हवन–यज्ञ कर सकते है। ध्यान–उपासना में प्रभु का अमृत पीने के पश्चात् सन्ध्या और हवन में इतना आनन्द आता है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उसे तो करके ही जानना पड़ेगा। प्रातःकाल पूर्व दिशा और सांयकाल पश्चिम दिशा की ओर मुख करके सन्ध्या–ध्यान–उपासना करने का लाभ यह है कि निकलते और छिपते सूर्य की ओर मुख करके साधना करने से तेज प्राप्ति की गति में वृद्धि होती है। सूर्य के निकलने से पहले और छिपने के पश्चात् भी इन दिशाओं में तेज छाया रहता है।

योग अपना गुरू आप बन जाता है

जब इस प्रकार आपका योग चल पड़ता है तो फिर आगे की अवस्थाओं के लिये योग अपना गुरू आप ही बनता चला जाता है अर्थात् साधक को अगला रास्ता अपने आप सूझने लगता है। कैसा है वह

रास्ता? वह है जहां पर भी साधक का ध्यान अत्यन्त आनन्द युक्त होकर ठहरने लगता है वहीं पर ध्यान का अभ्यास बढ़ाते रहें। यह अवश्य ध्यान में रहे कि जो आनन्द प्राप्त हो रहा है। आनन्द की जो लोरें और फुहारें शरीर में उठ रही हैं, बरस रही हैं उन्हें प्रभु जी ही उठा रहे हैं, बरसा रहे हैं। उपासक की साधना को प्रभु जी व्यर्थ नहीं जाने देते। उपासक प्रभु की ओर एक कदम रखता है तो प्रभु जी उसकी ओर दुगुणा बढ़ते हैं। इसलिये प्रभु के प्रति प्रेम उमड़ाते जायें, समाधि की ओर स्वयं बढ़ते जायेंगे। बस यहां एक सुझाव साधकजनों को मैं बड़ी विनम्रतापूर्वक फिर से देना चाहूंगा कि इस साधना में ईश्वर की कृपा से आपको जो भी सुख, सुविधा, सिद्धि, चमत्कार या कुशलता प्राप्त होवें उन्हें अपने तक गुप्त रखना है। यदि भूल से भी किसी को जिक्र कर दिया तो प्रभु की ओर से प्राप्त उस अतिरिक्त सुख–सुविधा, सिद्धि या चमत्कार की जो प्राप्ति हुई थी वह समाप्त हो जायेगी। वही स्थिति दोबारा लाने में साधक को फिर से उतना ही समय दोबारा लगाना पड़ेगा जितने समय में वह प्राप्त हुई थी। मेरे अपने निजि अनुभव से मैं यह अनुरोध पूर्व पृष्ठों में भी कर चुका हूं। पुराने योगियों के ऐसे ही उल्लेखों से मेरी इस बात का समर्थन भी हुआ है, जिसे पहले भी बताया जा चुका है। हां जब आप मंजे हुए योगी बन जायेंगे तो तब कुछ बातें अपने आत्मीयजनों को इसलिये प्रकट कर देना ताकि वे भी योग मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित हों। तब तक आप ऐसे बने रहें जैसे कि आप कुछ जानते ही नहीं हैं। अपने अधिक बोलने पर रोक लगायें क्योंकि उपासना से बढ़ा हुआ आपका ओज बहुत–बहुत बोलने के लिये उर्जा देगा। उस उर्जा को अधिक बोलकर बाहर खोने की बजाय मौन रहकर उसके आनन्द का लाभ शरीर में ही उठायें।

वैदिक योगी गुरूओं से परामर्श लें भक्ति के सम्बन्ध में यदि आप चाहें तो समय–समय पर योगियों के परामर्श भी स्वयं मिलकर, दूरभाष से या पत्राचार द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। कुछ वैदिक योगी–महात्माओं के नाम व पते अलग से पुस्तक के अन्त में दिये गये हैं। वैदिक योगी–महात्माओं से परामर्श क्यों? क्योंकि ये योगी आर्ष पद्धति अर्थात् वेद परम्परा के अन्तर्गत वेद की ऊंची विद्या और तप के धनी होते हैं। सत्यज्ञानी होने से ये किसी प्रकार के प्रपंच की बात नहीं करते । अन्य अधिकांश गुरू प्रपंचों का भी सहारा लेते हैं और अपने भक्तों के भगवान बने रहते हैं। उनका निर्देश होता है कि गुरू ही भगवान होता है बल्कि भगवान से भी बढ़कर होता है। इन उपदेशों से भक्तों पर ऐसा रंग चढ़ता है कि उन्हें मानों अपने घर आदि में कईं बार गुरू का साक्षात् अनुभव होने लगता है। वे बताते हैं कि मैं गुरू के सिमरन में था। गुरू साथ खड़े थे। इस तरह दिखाई दिये थे, उस तरह दिखाई दिये थे। जबकि मीलों दूर बैठे गुरू को इस बारे में कुछ भी पता नहीं होता, परन्तु गुरू अपने चेलों से सुनकर इस भेद को ऐसे छिपाये रखते हैं कि जैसे उन्हें सब कुछ पता है।[1] ऐसे चेलों से तो तथाकथित गुरूओं की खूब मौज बन आती है।[2] यह सारा खेल चेलों के मन–चित के गुण–धर्म का है। मन की आस्था जैसी बन जाती है, वह कल्पना से वैसा ही अनुभव करने लगता है जबकि उसमें सच्चाई कुछ नहीं होती।

1– यद्यपि दूर का हाल जानने, सुनने व देखने की भी योग सिद्धियां हैं। जिससे सिद्धयोगी उस हाल को दूर से ही लक्ष्य करके जान सकता है। योगदर्शन के 'समाधिपाद' सूत्र–36 में मन की ज्योतिष्मती प्रवृति बताई गई है आगे चलकर 'विभूति पाद' सूत्र–25 का अर्थ इस प्रकार दिया गया है – 'योगी को मन की ज्योतिष्मती प्रवृति के आलोक में संयम करने से सूक्ष्म, व्यवधानयुक्त तथा दूर की वस्तुओं का ज्ञान हो जाता है।' मेरे उपनगर घरौण्डा में एक महात्मा द्वारा दूर की सिद्धि का प्रयोग मेरे सामने भी हुआ था। योगदर्शन शास्त्र का तीसरा अध्याय 'विभूति पाद' अनेक सिद्धियों–विभूतियों के वर्णन से भरा पड़ा है।

2– टैलीविजन और समाचार पत्रों में आये दिन प्रपंची गुरूओं के दुष्ट चरित्र की पोल खोली जाती है। भक्तों से धन ऐंठने के साथ–साथ भोली–भाली श्रद्धामयी मां–बहन–बेटियों से छल करके व्यभिचार किया जाता है। ऐसे सजा काट रहे या मुकदमें भुगत रहे रामरहीम, आशाराम, रामपाल, कोशलेन्द्र प्रपन्नाचार्य फलाहारी, भीमानन्द जैसे कितने ही गुरूओं के नाम मैंने 'विश्व के अनुपम धर्म ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का परिचय' नामक लघु पुस्तक के ग्यारहवें समुल्लास में उनके कुकर्मो के संक्षेप सहित दिये हुए हैं।

मात्र पूजा नहीं ज़रूरत है राम के चरित्र को जीवन में उतारने की भी

–सीताराम गुप्ता

हिन्दी की सरल–सुबोध लोकप्रिय रामकथा साकेत के रचनाकार प्रसिद्ध कवि मैथिली शरण गुप्त लिखते हैः

राम! तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।

राम भारतीय संस्कृति के अद्वितीय नायक हैं। उनका चरित्र अत्यंत उदात्त, प्रेरक, आकर्षक व अनुकरणीय है। इसी उदात्तता के कारण रामकथा और राम का चरित्र चित्रण वैदिक काल से आज तक हमारे कवियों–कलाकारों व जन–मानस को आकर्षित करता रहा है। उनके चरित्र को लेकर असंख्य ग्रंथों की रचना हुई। सभी ने उन्हें परम नायक माना। संस्कृत, प्राकृत व हिन्दी में ही नहीं सभी भारतीय भाषाओं व बोलियों में अनेकानेक विस्तृत रामकथाएँ लिखी गईं। विदेशी भाषाओं में भी असंख्य अनुवाद हुए। भारत व भारतीय उपमहाद्वीप में ही नहीं पूरी दुनिया के अनेक देशों में राम अत्यंत लोकप्रिय हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि पूरी दुनिया किसी न किसी रूप में राम के चरित्र से प्रभावित है।

संभव है रामकथा एक प्रतीक कथा ही हो और राम उस प्रतीक कथा के एक काल्पनिक पात्र हों लेकिन इस प्रतीक कथा के काल्पनिक पात्र के क्या कहने? राम सबके आदर्श हैं क्योंकि राम एक आदर्श पुत्र, एक आदर्श भाई, एक आदर्श पति व एक आदर्श राजा हैं। किशोरावस्था में आततायियों का वध करने वाले एक निडर व बहादुर किशोर व युवक हैं राम। सहजता व सरलता उनका अद्वितीय गुण है। कोमल–कमनीय व अत्यंत विनम्र हैं राम। कौन सा गुण है जो उनमें नहीं? इन्हीं गुणों के कारण वो सबको आकर्षित करते हैं। सब राम में अपने निकटस्थ संबंधियों की छवि तलाशते हैं। मेरा पुत्र हो, पति हो, भाई हो अथवा राजा हो सब राम जैसे गुणों से ओतप्रोत हों।

राम का चरित्र इतना उदात्त, प्रेरणास्पद, आकर्षक व सम्मोहक है कि राम का चरित्र निभाने वाले अभिनेता तक के प्रति हमारी श्रद्धा उमड़ने लगती है। हम कलाकार को राम मानकर उसकी पूजा करने को विवश हो जाते हैं। उर्दू के लोक कवि नज़ीर अकबराबादी हों या दार्शनिक अल्लामा इक़बाल हों सभी राम से प्रभावित हैं। इक़बाल कहते हैं कि **है राम के वजूद पर हिन्दोस्ताँ को नाज़।** वो राम के बारे में लिखते हैंः

तलवार का धनी था भुजाअत में मर्द था,
पाकीज़गी में जोशे–मोहब्बत में फ़र्द था।

राम का कोई सानी नहीं। राम गुणों की खान हैं। बाल्मीकि के राम एक आदर्श पुरुष व आदर्श शासक हैं। आज उसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। उसी राम के राज्य को पुनः स्थापित करने की बातें की जाती हैं। राम के राज्य में सभी सुखी व संतुष्ट थे। समाज शोषणमुक्त था। जहाँ पर भी नकारात्मक घातक शक्तियों का उदय होता राम सबके सहयोग से उनका विनाश करने में देर नहीं लगाते थे। धीरे–धीरे उनमें वो गुण आरोपित किए जाने लगे जो एक मनुष्य में दुर्लभ ही नहीं असंभव हैं। राम अवतार हैं। पहले भगवान उनका विशेषण बना और बाद में राम भगवान का पर्यायवाची हो गया। राम मुक्ति के प्रतीक बन गए। पहले आततायियों से मुक्ति दिलाने वाले नायक और बाद में भव सागर से मुक्ति दिलाने वाले आराध्य बन गए राम। उदात्त गुणों से युक्त ऐसे धीर–वीर महानायक को लोकमानस कैसे विस्मृत कर सकता है? इसीलिए हर वर्ष चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को धूमधाम से राम का जन्म दिन मनाया जाता है।

महापुरुषों के जन्मदिन मनाने का उद्देश्य है उनके योगदान को रेखांकित करना, उनके गुणों को याद करना और उन्हें स्वयं पर लागू करना। रामनवमी भी इसी उद्देश्य से मनाई जानी चाहिए। विचार करने की ज़रूरत है कि हम राम का जन्मदिन मनाते हैं अथवा रावण का? राम एक आदर्श राजा थे। उनके राज्य में न केवल प्रजा सुखी, संतुष्ट और भयमुक्त थी अपितु ऊँच–नीच का भेद–भाव भी नहीं था। राम समन्वयवादी थे। आज के शासक धर्म के नाम पर लोगों को बाँट रहे हैं। उनमें समन्वय का पर्याप्त अभाव

है। राम प्रजावत्सल थे और प्रजा भी राम से प्रेम करती थी। दिनांक 22:03:2015 को संसद भवन के एक हिस्से में आग लगने पर एक व्यक्ति दूसरे से पूछता है कि आग में दो–चार सांसद भी स्वाहा हुए या आग बेकार गई। कैसी विवशता है कि लोग जिन्हें अपने मतों से चुनते हैं उनसे प्यार तो दूर उन पर विश्वास तक नहीं। कई बार चार ग़लत लोगों में से एक ग़लत व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि चुनने की विवशता तो देखिए। क्या यही राम राज्य है? क्या इसीलिए सरकार रामनवमी को अवकाश रखती है?

राम की सहजता–सरलता ही नहीं उनकी विनम्रता व धैर्य भी अनुकरणीय है। अपनी सहजता, विनम्रता व धैर्य से राम विषम से विषम परिस्थितियों को अनुकूल बनाने में सक्षम हैं। परशुराम जैसे भयंकर क्रोधी व्यक्ति को भी क्रोधाधिक्य त्यागने पर विवश कर देते हैं। आज हमारे घरों में परिवार के सदस्यों के बीच, मित्रों व रिश्तेदारों के बीच, व्यापार व व्यवसाय में संलग्न लोगों के बीच तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर हमारा आचरण पूर्णतः उचित नहीं माना जा सकता। अभद्रता, अशालीनता, अपनी ही बात को सही ठहराने का पूर्वाग्रह व बाहुबल का प्रदर्शन सामान्य बात हो गई है। हम बात–बात पर आपे से बाहर हो उठते हैं। रोडरेज़ में गोलियाँ चल जाती हैं। छोटी–छोटी बातों के लिए क़त्ल हो जाते हैं। रामनवमी से पहले नौ दिनों तक कन्याओं का पूजन किया जाता है लेकिन महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों और उनके दैहिक व आर्थिक शोषण की घटनाओं में लगातार बेतहाशा वृद्धि हो रही है। राम का जन्म मनाना है तो अपने अंदर के रावण को ज़रूर मारें अन्यथा यह आयोजन मात्र आडंबर बन कर रह जाएगा। राम की मूर्ति पूजने अथवा शोभायात्रा निकालने की बजाय राम के गुणों को आत्मसात करने में ही है वास्तविक रामजन्मोत्सव का आयोजन।

राम पिता की आज्ञा का पालन कर सहर्ष वन में चले जाते हैं। अपना अधिकार भरत को सौंपने अथवा राज्य का त्याग करने में देर नहीं लगाते। आज रामनवमी धूमधाम से मनाने वाले कितने लोग हैं जो वास्तव में अपने माता–पिता की आज्ञा का पालन करने, उनकी सेवा कर उन्हें सुख पहुँचाने को तत्पर रहते हैं? कितने लोग हैं जो अपने निकट संबंधियों को स्वतः उनका अधिकार सौंपने में गर्व अनुभव करते हैं? कितने लोग हैं जो समाज व राष्ट्र के हित में अपना हित भूल जाते हैं? कितने लोग हैं जो किसी पर अत्याचार होते देख मुँह नहीं मोड़ लेते? समाज में ऊँच–नीच व भेद–भाव, कमज़ोर वर्ग का उत्पीड़न व आर्थिक शोषण, बलात्कार की बढ़ती घटनाएँ, निकट संबंधियों में पनपते विवाद, बढ़ते वृद्धाश्रम व वृद्धजनों की बढ़ती उपेक्षा तथा अपमान इस बात का परिचायक है कि हम रामजन्मोत्सव मनाने की पात्रता ही नहीं रखते।

राम पर पत्नी सीता को त्यागने का आरोप लगाया जाता है। आरोप अपनी जगह सही हो सकता है लेकिन इसके बावजूद राम एक आदर्श पति हैं। उस समय बहुपत्नी प्रथा होते हुए भी राम एक पत्नीव्रती रहे। सीता को त्यागने के उपरांत भी पुनर्विवाह नहीं किया। हर क्षण मर्यादा का पालन किया। अंदर से पीड़ित होने पर भी अपने कर्तव्यों की अवहेलना नहीं की। वनवास के दौरान सीता के कष्टों को देखकर अत्यंत व्याकुल हो उठते हैं। अपने हाथों से सीता के कष्टों को दूर करने का प्रयास करते हैं। वनवास के दौरान सीता के साथ अत्यंत प्रेमपूर्वक समय व्यतीत करते हैं लेकिन उनका प्रेम भी अत्यंत मर्यादापूर्ण है उसमें उच्छृंखलता नहीं है। आज प्रेम के नाम पर उच्छृंखलता व अश्लीलता सामान्य बात हो गई है। जीवन के हर क्षेत्र में मर्यादा का हनन हो रहा है। विवाह व्यापार बन गया है। स्त्री की अस्मिता को जार–जार किया जा रहा है। विवाहेतर संबंधों को बढ़ावा देकर आधुनिकता की निशानी माना जाने लगा है। ऐसे अमर्यादित व अनर्गल समाज का निर्माण करने के बावजूद हम राम को कटघरे में खड़ा करने का दुस्साहस करने से भी नहीं हिचकिचाते।

वनवास के दौरान राम अपने हाथों से निर्मित पर्णकुटी में आनंदपूर्वक निवास करते हैं। उनकी आवश्यकताएँ सीमित हैं। अपनी अपरिग्रह वृत्ति के कारण राम संतुष्ट व सुखी हैं। हमारी परिग्रह वृत्ति के कारण आज हम अनेकानेक समस्याओं से ग्रसित होकर कुंठित व असंतुष्ट जीवन व्यतीत करने को अभिशप्त हैं। वनवासियों व मनुष्येतर प्राणियों के प्रति भी राम का अपार स्नेह है। राम सकारात्मकता के पुंज हैं। सीता का अपहरण हो जाने पर राम अत्यंत व्याकुल हो उठते हैं। उनकी व्याकुलता देखकर देखने–सुनने वाले भी व्याकुल हो जाते हैं। सीता को

रावण की क़ैद से छुड़वाने के लिए राम जान हथेली पर रखकर रावण जैसे बलशाली से भिड़ जाते हैं। सीता की खोज और रावण पर विजय पाने के लिए सबका सहयोग लेते हैं। सीता की खोज में अत्यंत व्याकुल होते हुए भी मार्ग में आने वाले मनुष्यों व अन्य प्राणियों का उद्धार करने में चूकते नहीं। आज हमारी सोच कितनी विकृत व हृदय कितना संकुचित हो गया है स्वयं देख लीजिए।

तुलसीकृत कवितावली में अयोध्याकाण्ड में ''वन के मार्ग में'' प्रसंग से एक सुंदर सवैया है **''पुरतें निकसी रघुबीरबधू धरि धीर दए मग में डग द्वै।''** जब राम को चौदह वर्ष का वनवास मिलता है तो वे सीता व अनुज लक्ष्मण के साथ वन की ओर प्रस्थान करते हैं। रघुवीरप्रिया सीता जैसे ही नगर से बाहर हुईं और उन्होंने धैर्य धारण करके मार्ग में अपने कदम रखे उनके मस्तक पर पसीने की बूँदें झलकने लगीं और दोनों अधर सूख गए। तभी उन्होंने राम की ओर देखकर पूछा कि अभी कितनी दूर और चलना है व कहाँ चलकर पर्णकुटी बनानी है? अभी वे नगर से आए ही कितनी दूर थे पर सीता की आँखों में आतुरता झलकने लगी थी। सीता मुख से तो कुछ नहीं कह रही हैं लेकिन उनकी बेचैनी से सब कुछ झलक रहा है, सब कुछ स्पष्ट है। राम सीता के बिना कुछ कहे ही सब कुछ समझ जाते हैं। पत्नी की ऐसी बेचैनी, घबराहट, व्याकुलता, अधैर्य अथवा व्यग्रता या कष्ट देखकर राम के सुंदर नेत्रों से अश्रु प्रवाहित होने लगते हैं।

तुलसीदास लिखते हैं कि ''**तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।**'' राम के नेत्रों से जल चूने लगता है, उन नेत्रों से जो अति चारु हैं। यहाँ यह विचारणीय हो जाता है कि नेत्रों के अति कोमल, अति चारु हो जाने के कारण उनसे अश्रु प्रवाहित हो रहे हैं अथवा पत्नी की व्यग्रता को देखकर अश्रु प्रवाहित होने के कारण उनके नेत्र अति चारु हो गए हैं? वस्तुतः राम के सुंदर नेत्रों में सरलता व संवेदनशीलता है जो उनके हृदय की सरलता व परदुखकातरता का प्रतीक है। जब राम के नेत्र पत्नी के कष्ट को देखते हैं तो उनका हृदय करुणा से ओतप्रोत हो जाता है, सीता का दुख उनका अपना दुख बन जाता है और उनकी ये पीड़ा नेत्रों से प्रवहमान अश्रुओं के रूप में व्यक्त हो जाती है। यही नेत्रों का वास्तविक सौंदर्य है। पत्नी को कष्ट में देखकर पति की आँखों में आँसू होना सफल व उत्तरदायित्वपूर्ण दाम्पत्य जीवन की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है?

पत्नी की पीड़ा से पति कैसे अविचलित रह सकता है? कैसे उसकी उपेक्षा कर सकता है? यदि पति पत्नी के प्रति उत्तरदायी नहीं तो वह कैसे चारु हो सकता है, कैसे उसके नेत्र चारु हो सकते हैं? जो हृदय करुणा से पिघलकर नेत्रों के माध्यम से छलक नहीं पड़ता वह हृदय नहीं कुछ और ही है। वह पाशाण है, पत्थर है। उसमें जीवन का स्पंदन नहीं, यांत्रिक हलचल है। जो दूसरों की पीड़ा को देखकर नम न हों वे आँखें सजीव नहीं, निर्जीव हैं, बटन सदृश हैं, शरीर में किसी कृत्रिम अंग के समान हैं। अगले सवैये में कहा गया है कि लक्ष्मण के पानी लेने चले जाने पर राम अपनी प्रिया की थकान के बारे में जानकर वहीं छाया में बैठकर बड़ी देर तक सीता के पैरों में चुभे काँटे निकालते हैं।

तुलसीदास कहते हैं **''जानकी नाह को नेहु लख्यो, पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े।''** अर्थात् जब जानकी ने अपने प्राणप्रिय राम के इस प्रेम को देखा तो उनका शरीर पुलकित हो उठा और नेत्रों में आँसू भर आए। यह भी पति के प्रेम व उत्तरदायित्वपूर्ण चरित्र की पराकाष्ठा है जिसकी अनुभूति के परिणामस्वरूप पत्नी की आँखें अश्रुमय हो जाती हैं। आज पत्नियों की आँखों में ऐसे आँसू दुर्लभ हो गए हैं। हाँ आज पत्नियों की आँखों में पतियों व उसके परिवारवालों की हैवानियत से उपजे आँसू ज़रूर हर जगह दिखलाई पड़ जाते हैं। इसका कारण स्पष्ट है। आज हममें राम जैसी सरलता, संवेदनशीलता, परदुखकातरता व उत्तरदायित्व की भावना नहीं रही। सीता जैसी पत्नी तो हर कोई चाहता है लेकिन राम बनने को कोई तैयार नहीं दिखलाई पड़ता। आज देश में पुनः रामराज्य स्थापित करने की बात होती है। राष्ट्र, समाज व हर घर में यह तभी संभव है जब हम सब राम जैसे उदात्त भावों से ओतप्रोत हो जाएँ।

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा, दिल्ली – 110034
मोबा0 नं0 9555622323
Email : srgupta54@yahoo.co.in

यज्ञ, भजन और सम्मान से बढ़ी अध्यात्म पथ की शान

सुरिंद्र चौधरी
सह संपादक (अध्यात्म पथ)

अंतर्राष्ट्रीय कथाकार आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के तत्वावधान में गत 16 अप्रैल 2023 को सांय 3:30 बजे पाकेट सी - 2, केशव पुरम. दिल्ली में विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ, विराट भजन सन्ध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ गायत्री में अटूट निष्ठा रखने वाली श्रीमती स्वर्णा सेतिया जी एवं सुपुत्र श्री संजय सेतिया जी द्वारा सुंदर गायत्री गान " गायत्री को भज ले शुद्ध मन होगा, घर में बरसता अमृत होगा" की प्रस्तुति से हुआ। आचार्य शिव नारायण शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ प्रारम्भ कराने से पूर्व आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने यज्ञ की महिमा का चार पंक्तियों में सुंदर वर्णन इस प्रकार किया :-

यज्ञ जीवन का सार है यज्ञ त्रिभुवन का आधार है ।
जो इस को अपनाएगा उस का बेड़ा है पार ॥

डॉ. अनुरंजना विरमानी एवं डा वाई के विरमानी, श्रीमती सविता टंडन एवं श्री अनिल टंडन, श्रीमती कमलेश आर्य एवं श्री जीवन लाल आर्य, श्रीमती सीमा सिब्बल एवं श्री राकेश सिब्बल, श्रीमती कुसुम भंडारी एवं श्री राज कुमार भंडारी ने यज्ञ में मुख्य यजमान के रूप में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित कर के यज्ञवेदी की शोभा को बढ़ाया। चंद्रशेखर शास्त्री जी ने जीवन को सुखमय बनाने के लिए ''इदं न मम'' को जीवन में धारण करने की प्रेरणा देते हुए कहा :-

गुण न हो तो रूप व्यर्थ है
विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है
भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है
श्रद्धा न हो तो यज्ञ व्यर्थ है
परोपकार न हो तो सारा जीवन व्यर्थ है।

राष्ट्र कल्याण की भावना से सुसज्जित वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना से आहुति अर्पित कराते हुए आचार्य शिव नारायण शास्त्री जी ने प्रार्थना के मन्त्र में निहित भावों को प्रकट करते हुए सक्षम राष्ट्र का चित्र निम्न पंक्तियों में किया जिस राष्ट्र में ब्राह्मण विद्वान हो, वेदज्ञ हो, क्षत्रिय महापराक्रमी होते हुए राष्ट्र रक्षा में समर्पित हो, वैश्य जन उत्तम धन धान्य से राष्ट्र का पोषण संवर्धन करने वाले हो, सेवा भाव से पूरित सभी जन इस समग्र राष्ट्र की उन्नति में अपनी सहभागिता देने को तत्पर हो, वही राष्ट्र सक्षम राष्ट्र कहलाने का अधिकारी है। चंद्रशेखर शास्त्री जी ने कहा खुशी के लिए काम करोगे तो खुशी नहीं मिलेगी, खुशी से काम करेंगे तो खुशी मिलेगी। यज्ञ के उपरांत अमेरिका से पधारे डॉ अमरजीत शास्त्री के प्रेरक उद्बोधन ने सब को मंत्रमुग्ध कर दिया, उन्होंने कहा रामायण का युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व सरयू नदी के तट पर यज्ञ किया जाने वाला था तो हनुमान जी ने राम जी से पूछा कि क्या यज्ञ करने से युद्ध में विजय अवश्य प्राप्त होगी। राम जी ने मुस्कराते हुए कहा कि जितना मैंने वेदों को पढ़ा है अपने ऋषियों मुनियों से जाना है कि संसार में यदि किसी कार्य को पूर्ण करना चाहते हो, कार्यो को करते हुए विजयी होना चाहते है तो यज्ञ विजयी बनने का आधार बनेगा। आज यजमानों ने जो यज्ञ किया है वह आप को विजयश्री दिलाने वाला यज्ञ है। ओम ईश्वर के घर को डोर बेल है, जब आप ओम बोल कर अपनी साधना प्रारम्भ करते हो यो ईश्वर को आभास हो जाता है कि कोई मेरा अपना है जो मुझे बुलाना चाह रहा है। जो भगवान के घर नहीं आते है भगवान उन के घर नहीं आते है। प्राणी को बिगाड़ने या सुधारने में उस के विचारों का अहं योगदान होता है, इस लिए अपने विचारों को उच्च कोटि का बनाये। ईश्वर सब से बड़ा सी ए है वह एक दिन लेता है तब दूसरा दिन देता है जब प्राणी एक साँस लेता है तब ईश्वर उसे दूसरा साँस देता है। वरेण्यम बोलते ही स्वयं को ईश्वर के चरणों में समर्पण करदें, ईश्वर से प्रार्थना करें कि मेरी बुद्धि प्रेरणा देने वाली हो, बुद्धि में भक्ति हो, मन में शक्ति हो। तत्पश्चात मुख्य

अतिथि श्री सत्यानन्द आर्य जी ने ओम ध्वज फहरा कर के वातावरण को ओममय बनाया। श्रीमती कविता आर्य ने अपने साथियों के सहयोग से मधुर भजन प्रस्तुत कर के सभागार को संगीतमय बना दिया। कविता जी ने भजनों का शुभारम्भ "गायत्री तुझ को लाखो प्रणाम" भजन से कर के गायत्री महिमा का वर्णन करते हुए किया तत्पश्चात " करो यज्ञ और दान यदि सुख पाना है "भजन के माध्यम से यज्ञ और दान करने के लिए आर्यजनों को प्रेरित किया। जो जिंदगी पुरुषार्थ के सांचे में ढली है। सब के कल्याण के बिना प्राणी का कल्याण नहीं हो सकता, इस भावना को ''स्वस्ति ना इन्द्रो वृद्ध, कल्याण करो'' भजन के बोल से सभी के मन में जागृत किया। आर्य समाज सी पी ब्लाक पीतमपुरा के यशस्वी मंत्री श्री सोहन लाल आर्य जी के आठ वर्षीय पौत्र अथर्व आर्य ने सायंकालीन मंत्रों का अर्थ सहित पाठ कर के अपनी विलक्षण प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अध्यात्म पथ पत्रिका द्वारा अथर्व आर्य एवं ध्वजारोहण की व्यवस्था करने वाले आर्य वीर गौरव आर्य को ओम स्मृति चिन्ह प्रदान कर के उत्साहित किया गया। श्री विनय शुक्ल 'विनम्र' एवं दर्शनाचार्या विमलेश बंसल के राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत काव्य पाठ का सभी ने भरपूर आनंद लिया। श्री विनय शुक्ल ने निम्न पंक्तियों से महर्षि दयानंद को कोटिश: नमन किया।

देकर पवित्र ज्ञान किया दंभ का दमन
मनुजों हेतु भूमि किया आप ने चमन
कुल पूज्य जन पूज्य महर्षि दयानंद को कोटिश: नमन

श्री विनय शुक्ल जी का काव्य पाठ राष्ट्र भक्ति की कविता के बिना अधूरा रह जाता, इस लिए विनय जी निम्न पंक्तियाँ राष्ट्र को समर्पित की

हम सच्चे हिन्दुस्तानी है, हम अच्छे हिन्दुस्तानी है
हम बच्चे हिन्दुस्तानी है, देखो तुम इतिहास खोल कर
हम ने लिखी कहानी है, हम सच्चे हिन्दुस्तानी है
हम अच्छे हिन्दुस्तानी है, हम बच्चे हिन्दुस्तानी है
मत बोलो कटु वचन कभी भी, हम में सत्य की शक्ति है
हम में ऐसी भक्ति है, गिनते हम दांत सिंह के
हम से निकला सानी है, हम सच्चे हिन्दुस्तानी है
हम अच्छे हिन्दुस्तानी है, हम बच्चे हिन्दुस्तानी है

दर्शनाचार्या विमलेश बंसल ने भी अपने काव्य पाठ में राष्ट्र भक्ति का जोश आर्य जनों के हृदयों में जागृत करने का सफल प्रयास किया।

ओ भारत के शेरों जवानों दलेरों
तुम्हें आज उठने का वक्त आ गया है
गरज को मिटने का वक्त आ गया है
ओ शंकर, हकीकत, दयानंद से बच्चों
ओ जोरावर जुझावर फतेहसिंह से बच्चों
न खेलों तुम कांच की गोलियों से
जंगी फसादी आतंकियों की धज्जी उड़ने का वक्त आ गया है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष श्री सत्यानन्द आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा महर्षि दयानंद जी विलक्षण प्रतिभा एवं आत्मबल के धनी थे। 30 वर्षों तक अनवरत देश भ्रमण करते रहे और प्रवचनों और साहित्य के द्वारा देश मात्र, मानव मात्र को वेद मार्ग पर चलने का कल्याणकारी सन्देश दिया। आज हमें पता है कि महर्षि जी को अपने उद्देश्यों में पर्याप्त सफलता मिली है। विगत वर्षों में समाज में सकारात्मक परिवर्तन समाज में देखने को मिले है, वह सब महर्षि जी को सोच एवं दिशा दर्शन का परिणाम है। महर्षि जी ने सनातन धर्म को राष्ट्र धर्म नहीं अपितु युग धर्म की संज्ञा दी थी।

एक नहीं दो नहीं अपितु 12 स्वर्ण पदक विजेता योगाचार्य श्री कृष्ण गर्ग जी के योगासनों को देख कर आर्य जन हतप्रभ रह गए। साधना में लीन, तप और त्याग की प्रतिमूर्ति स्वामी सुखदेव आर्य तपस्वी, अध्यात्म पथ पत्रिका के संरक्षक एवं शिक्षा समिति के चेयरमैन श्री यशपाल आर्य, श्री ओम सपरा, श्री संजय सेतिया, श्री एस.एस. आर्य, श्री अजय चौधरी, श्री सतीश आर्य, श्री देवेंदर श्रीधर, श्री पी के सचदेवा, श्री राजेंदर दुर्गा जी, श्री अमरनाथ टक्कर जी आदि की गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की गरिमा में चार चाँद लग गए। इस अवसर पर समाज सेवा में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करने वाली आर्य महिलाओं

(डॉ. पुष्पलता वर्मा, डॉ. उमा शशि दुर्गा, श्रीमती मीना आर्या, श्रीमती मोहिनी आर्या, श्रीमती उर्मिला आर्या, श्रीमती रेणु त्यागी, श्रीमती श्रुति सेतिया, श्रीमती प्रतिभा सपरा, श्रीमती संतोष नंदवानी, श्रीमती दीपिका भाटिया, श्रीमती स्वर्णा सेतिया, श्रीमति राजश्री यादव, श्रीमती हर्ष आर्या, श्रीमती सुरेखा चोपड़ा, श्रीमती रचना आर्या, डॉ. रचना चावला, श्रीमती कविता आर्या, श्रीमती सरोजिनी जौहर, श्रीमती उषा सरीन, श्रीमती बबीता गोयल, श्रीमती अमृत आर्या) को आर्य महिला गौरव सम्मान से सम्मानित करके उत्साहवर्धन किया गया। पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय की छात्रा अंकिता चौधरी को विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षाओं में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर मेधावी छात्रा सम्मान से सम्मानित किया गया। अध्यात्म पथ पत्रिका के विशेषांक का विमोचन विशिष्ट अर्याजनों द्वारा किया गया और इस विशेषांक की प्रति सभी अतिथियों एवं श्रोताओं को निःशुल्क वितरित की गई। श्री चंद्रशेखर शास्त्री जी ने दान और यज्ञ की महिमा बताते हुए कहा

शरीर की शुद्धि के लिए स्नान चाहिये
मन की शुद्धि के लिए ध्यान चाहिये
सम्पति की शुद्धि के लिए दान चाहिये
वातावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ का अनुष्ठान चाहिये श्री अमर नाथ टक्कर, श्री संजय सेतिया, श्रीमती मीना आर्य, श्रीमती सुनीता चौधरी, कु. अर्पित चौधरी, कु. शाश्वत एवं कुमारी प्राची आर्या को कार्यक्रम के प्रबंधन में योगदान करने के लिए आचार्य जी ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम की रूप रेखा बनाने से लेकर सभी कार्यो को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने में आचार्य जी के साथ देने वाले श्री यशपाल आर्य जी, श्री सुरिंद्र चौधरी जी एवं श्री अशोक सुनेजा जी का विशेष रूप से सम्मान किया गया। श्री देवेंदर श्रीधर जी ने अपने व्यक्तव्य में कहा कि चंद्रशेखर शास्त्री जी आर्य समाज एवं महर्षि दयानंद के सिद्धांतों के प्रचार प्रसार हेतु बहुत कार्य कर रहें है, ईश्वर उनको और अधिक कार्य करने की शक्ति प्रदान करें। कनाडा से पधारी इंडो केनेडियन क्लब की उप प्रधाना श्रीमती सरोजिनी जौहर ने आर्य महिला गौरव सम्मान प्राप्त करने के बाद अपने उद्‌बोधन में कहा आचार्य जी ने बहुत सुंदर उत्सव का आयोजन किया है, बहुत खुशी होती है जब महर्षि दयानंद की बात याद आती है। देश को महर्षि दयानंद मिल गये, पुष्प वाटिका के खिल गए। श्रीमती जौहर ने कहा कि विवाह के अवसर पर भेट स्वरूप प्राप्त चतुर्वेद शतकम को पढ़ने का सौभाग्य उन्हें करोना कल में आचार्य जी के कारण ही प्राप्त हो सका। आओ हम सब मिल कर वैदिक धर्म को आगे बढ़ाएं। आर्य समाज आउटर रिंग रोड विकास पूरी से पधारी महिलाओं का आचार्य जी ने कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए विशेष आभार प्रकट किया और उन्हें ओम स्मृति चिन्ह भेंट स्वरूप प्रदान किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री यशपाल आर्य जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी का आभार प्रकट किया। श्री यशपाल जी ने कहा कि आचर्य जी सदा किसी न किसी कार्य में लगे रहते है। शांति पाठ के उपरांत सभी के लिए सात्विक एवं स्वादिष्ट प्रीति भोज की व्यवस्था आचार्य जी द्वारा करवाई गयी।

ए-2/79, सेक्टर 5, रोहिणी, दिल्ली-110085
मो.: 9212066425

यज्ञ, संस्कार, वेद प्रवचन, भक्ति सत्संग एवं पारिवारिक सत्संग हेतु सम्पर्क करें।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार, सम्पादक-अध्यात्म पथ

फ्लैट नं. : सी-1, पूर्ति अपार्टमेन्ट, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018
मो. : 9810084806, 7838915996

आवश्यक सूचना

लेखकों से विनम्र निवेदन - वैदिक विचार धारा की अत्यन्त लोकप्रिय मासिक पत्रिका आप लोगों के स्नेह एवं सहयोग से देश-देशान्तर में काफी लोकप्रिय हो रही है। कृपया अपना लेख एवं कविता नीचे लिखे ई-मेल पर भेजने का कष्ट करें। ताकि समय पर लेख प्रकाशित हो सके।

E-mail : mukesh.graphics168@gmail.com
Hindi Font Name : AA Text
Mob. : 9717785355

मानव जीवन मिलना ईश्वर की हम पर सबसे बड़ी कृपा

–मनमोहन कुमार आर्य

हमें मनुष्य का जीवन मिला हुआ है। इस जीवन को प्राप्त करने में हमारे माता–पिता का योगदान निर्विवाद है, परन्तु इसके साथ ही हमारी आत्मा और शरीर का सम्बन्ध कराने वाला सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान परमात्मा है। यदि परमात्मा न होता तो न तो यह सृष्टि अस्तित्व में आती और न ही इस सृष्टि में प्राणी जगत का अस्तित्व होता। परमात्मा इस सृष्टि का निमित्त कारण है और उसने ही अपनी सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ता से अनादि, नित्य, अमर तथा नाशरहित जीवात्माओं को उनके पूर्वजन्मों के शुभ व अशुभ कर्मों का सुख व दुःख रुपी फल देने के लिये ही इस संसार की रचना की है और वही इसका पालन व संचालन कर रहे हैं। सृष्टि का उपादान कारण जड़ प्रकृति है जो प्रलयावस्था में अत्यन्त सूक्ष्म व सत्व, रज एवं तम गुणों वाली होती है। हम सभी मनुष्यों को ईश्वर को जानना है और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करना है जिससे हम अपने जीवन में दुःखों से बचे रहें और मृत्यु के बाद हमे मोक्ष प्राप्त हो सके। यदि हम मोक्ष की अर्हता पूरी न कर सकें तब भी हमें श्रेष्ठ मनुष्यों की देवयोनि में जन्म मिले जहां रहते हुए हम पुनः मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करें और उसे प्राप्त कर लें। जन्म व मृत्यु की पहेली को समझने के लिये सभी मनुष्यों को ऋषि दयानन्द कृत **'सत्यार्थप्रकाश'** आदि समस्त ग्रन्थों को पढ़ना चाहिये। सत्यार्थप्रकाश में अनेक विषयों पर जो विस्तृत ज्ञान है वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं है और यदि कुछ है भी, तो उसके लिये जिज्ञासु बन्धुओं को अनेक संस्कृत के वैदिक ग्रन्थों को पढ़ना होगा। सत्यार्थप्रकाश का महत्व यह है कि प्रायः सभी इष्ट विषयों का ज्ञान इस ग्रन्थ को पढ़कर 4–5 दिनों में ही हमें प्राप्त हो जाता है जिसमें सृष्टि व ईश्वर–जीवात्मा विषयक प्रायः सभी रहस्य सम्मिलित हैं। इसी कारण वेद मनीषी पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने कहा था कि उन्होंने अपने जीवन में लगभग 18 बार ऋषि दयानन्द रचित **'सत्यार्थप्रकाश'** ग्रन्थ पढ़ा। उन्होंने यह भी कहा है कि यदि सत्यार्थप्रकाश पढ़ने के लिये उन्हें अपनी समस्त भौतिक सम्पत्ति बेचनी पड़ती तब भी वह सहर्ष इस पुस्तक को प्राप्त करते। सत्यार्थप्रकाश का महत्व वर्णनातीत है। इसकी महत्ता एवं उपयोगिता को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

संसार में तीन अनादि, अमर तथा नित्य सत्तायें ईश्वर, जीव और प्रकृति हैं। हम जीव हैं और हमारी ही तरह अनन्त जीवात्मायें इस ब्रह्माण्ड में हैं। हम जीवात्मा हैं और हमारा शरीर पंचभौतिक पदार्थों के संयोग से बना है। यह संयोग ईश्वर के बनाये नियमों व व्यवस्था के द्वारा होता है। जिसकी उत्पत्ति होती है उसका विनाश भी होता है और जिसकी उत्पत्ति नहीं हुई उसका विनाश कभी नहीं होता। इसी कारण हमारा शरीर नाशवान अर्थात् मरणधर्मा है जबकि हमारी आत्मा अनादि, नित्य, अविनाशी और अमर है। हमारे इस शरीर के जन्म से पूर्व भी आत्मा का अस्तित्व था। हमारे इस शरीर के मृत्यु को प्राप्त होने पर भी हमारी आत्मा का अस्तित्व बना रहता है। ईश्वर अजन्मा है और इसके विपरीत जीवात्मा जन्म–मरण धर्मा है। इस जन्म से पूर्व भी हम अर्थात् हमारी जीवात्मा अपने पूर्वजन्म में उस जन्म के भी पहले के जन्मों के अभुक्त कर्मों के अनुसार किसी प्राणी योनी में इस ब्रह्माण्ड में कहीं इस पृथिवी के अनुरूप ग्रह पर जीवन व्यतीत कर रहे थे और ऐसा ही हमारे इस वर्तमान जीवन की मृत्यु के बाद भी होगा। परमात्मा की हम पर कृपा होने से वह हमारे इस जन्म व पूर्वजन्मों के अभुक्त कर्मों के अनुसार जन्म देता है और कर्मों के अनुसार ही हमारी जाति (मनुष्य, पशु वा पक्षी आदि), आयु और भोग (सुख व दुःख) निश्चित होते हैं। यदि परमात्मा व प्रकृति में से, दोनों अथवा कोई एक या दोनों ही, न होते तो हमारा जन्म व मरण नही हो सकता था और न ही हम किसी प्रकार के सुख व दुःखों का भोग कर सकते थे। हममें से कोई प्राणी दुःख नहीं चाहता, सभी प्राणी सुख, शान्ति व सुरक्षा चाहते हैं। **सुखों का आधार शुभ व श्रेष्ठ कर्म हैं।** अतः हमें अशुभ व पाप कर्मों को करना छोड़ना होगा। यदि हम पाप कर्मों को करना पूर्णतः छोड़ देंगे तो हमें दुःख प्राप्त नहीं होंगे और हम सुखपूर्वक इस जीवन को व्यतीत कर अगले जन्म में भी सुखी व श्रेष्ठ मानव जीवन प्राप्त कर देवकोटि की मनुष्य योनि में जन्म लेकर सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

परमात्मा ने हमारे मार्गदर्शन व कर्तव्यों की प्रेरणा करने के लिये ही सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान दिया था। हमारे पूर्वज ऋषियों व विद्वानों ने वेद व इसके सत्य अर्थों की रक्षा की और इस कल्प में हमारी आत्मा लगभग 1.96 अरब वर्षों की यात्रा करते हुए वर्तमान जीवन तक पहुंचे हैं। इस रहस्य का ज्ञान कराने में महर्शि दयानन्द जी का बहुत बड़ा योगदान है। हम सब उनके ऋणी हैं। उन्हीं के कारण हम अपने इस जीवन में वेद, सत्यासत्य कर्मों के स्वरूप सहित

धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष तथा इसकी प्राप्ति के उपाय ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र व सदाचरण आदि को जान सके हैं। हमें सुख व प्रसन्नता आदि जो भी अनुभूतियां प्राप्त होती हैं वह सब ईश्वर हमें हमारे ज्ञान एवं कर्मों के अनुरूप प्रदान करते हैं। हमें सदैव स्वयं को ईश्वर का ऋणी व कृतज्ञ अनुभव करना है और वेदाध्ययन सहित ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों एवं अन्य विपुल वैदिक साहित्य का अध्ययन करते रहकर सन्मार्ग का अनुगमन करना है।

यदि हम अपने कर्मों को देंखे तो हम पाते हैं कि अपने एक–एक कर्म का ज्ञान रखना कितना कठिन है। हम स्वयं ही अपने अतीत के अनेक कर्मों को भूल जाते हैं। ईश्वर हमारे इस जन्म व पूर्वजन्मों के किसी कर्म को नहीं भूलता। ईश्वर का यह गुण हमें उसके प्रति समर्पित होकर उपासना करने के लिये प्रेरित करता है। हमने कुछ दिन पहले फेसबुक पर एक मन्त्र व उसके मन्त्रार्थ को पढ़ा जिसमें कहा गया है कि हम दिन में कितनी बार पलक झपकते और कितनी बार आंखे खोलते हैं, इसका पूरा–पूरा हिसाब परमात्मा को पता होता है। हमारे छोटे, बड़े सभी कर्मों, चाहें वह दिन के प्रकाश में किये गये हों या रात्रि के अन्धेरे में अथवा सबसे छुप कर किये गये हों, परमात्मा उन सभी कर्मों को यथावत् जानता है और समयानुसार उनका फल कर्म करने वाले कर्ता को देता है। ईश्वर का यह गुण हमारे भीतर रोमांच उत्पन्न करता है। इसी कारण हमारे सभी विद्वान, योगी व ऋषि न तो स्वयं कभी कोई अशुभ व पाप कर्म करते थे और न ही किसी अन्य को करने की प्रेरणा करते थे। हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने व इसके लिए मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये ऋषि दयानन्द के अनेक विद्वानों द्वारा लिखे गये जीवन चरितों सहित स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, पं0 लेखराम आर्यमुसाफिर, पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती आदि महापुरुषों की जीवनियों व आत्मकथाओं को पढ़ना चाहिये। इससे हमें सद्कर्मों को करने की प्रेरणा मिलने के साथ असत्य के त्याग करने का बल भी प्राप्त होगा।

हम ईश्वर की कृपा को इस रूप में भी अनुभव करते है कि जब सन् 1825 के दिनों में सारा देश अज्ञान व आध्यात्मिक ज्ञान से भ्रमित व अन्धविश्वासों व कुपरम्पराओं से ग्रस्त था, तब उस परमात्मा ने कृपा करके तत्कालीन व भावी सन्ततियों के लिये वेदज्ञान से परिपूर्ण ऋषि दयानन्द को इस देश में भेजा था जिन्होंने स्थान–स्थान पर जाकर वेदों का प्रचार कर अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर किया था। ऋषि दयानन्द ने जड़–मूर्ति पूजा की निरर्थकता से हमारा परिचय कराया था और फलित ज्योतिश की निर्मूलता व निरर्थकता से भी हमें सावधान रहने के लिये कहा था। अवतारवाद को उन्होंने अवैदिक व असत्य कल्पना करार दिया था और मृतक श्राद्ध को उन्होंने तर्क व युक्ति से असिद्ध घोषित किया था। उन्होंने स्त्री व शूद्रों सहित मनुष्यमात्र को वेदाध्ययन का अधिकार दिया और आर्यसमाज गठित करके आर्यसमाज के 10 स्वर्णिम नियम हमें दिये थे। ऋषि दयानन्द ने हमें सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि आदि एक दर्जन से अधिक ग्रन्थ दिये जिन्हें पढ़कर हम अपने जीवन को ऊंचा उठा सकने सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। उनकी कृपा से ही आज हम व लाखों लोग असत्य मत व मार्ग को त्याग कर सत्य व कल्याण–पथ को ग्रहण कर सके हैं। इस जीवन में हमें वेद सहित ऋषि दयानन्द और प्राचीन ऋषियों के ग्रन्थ 6 दर्शन, 11 उपनिशद, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत सहित वैदिक विद्वानों के शताधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थों के अध्ययन का सुअवसर व सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हम अनुभव करते हैं कि यदि ऋषि दयानन्द जी न आये होते तो हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि हम वैदिक सनातन धर्म में बने रहते भी या नहीं? देश में धर्मान्तरण की जो आंधी विधर्मियों द्वारा चलाई गई थी उसे वेद प्रमाण, तर्क एवं युक्तियों से ऋषि दयानन्द और उनके बाद उनके अनुयायियों ने ही रोका था। हमें यह सब कार्य ईश्वर के द्वारा प्रेरित प्रतीत होते हैं। यदि ईश्वर हमारे महापुरुषों को प्रेरणा व शक्ति न देते तो आज देश और विश्व का स्वरूप वह न होता जो आज है। इस कार्य के लिये ईश्वर एवं ऋषि दयानन्द का कोटिशः वन्दन करते हैं। हमें वेद, उपनिषद, दर्शन एवं सत्यार्थप्रकाश आदि ऋषि ग्रन्थों का प्रचार कर वेदवाक्य **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् विश्व को श्रेष्ठ बनाने के विचार वा आज्ञा को सार्थक करना है।

परमात्मा ने हमें मनुष्य जन्म देने सहित भारत भूमि और वह भी एक वैदिक धर्मी वा सनातन धर्मी परिवार में जन्म देकर हम पर जो उपकार किया है, हम उसका भी सही मूल्यांकन नहीं कर सकते। भारत में जन्म लेकर हम ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से जुड़े हैं, यह भी ईश्वर की हम पर महती दया एवं कृपा है। हम सब आर्य भाई–बहिन इसके लिए ईश्वर के अतीव आभारी हैं। हम वैदिक साहित्य और वेद एवं ऋषियों की प्रेरणा के अनुरूप आचरणों से सदैव जुड़े रहें और ईश्वर की वेदाज्ञा का लोगों में प्रचार करते रहें, इसके लिये ईश्वर हमें सामर्थ्य एवं शक्ति प्रदान करें।

पता: 196 चुक्खूवाला–2देहरादून–248001
फोन:09412985121

घर-घर यज्ञ से पर्यावरण करें शुध्द व मनोकामना करें पूर्ण

डॉ. श्वेत केतु शर्मा, बरेली
मो.: 7906178915

आज के विज्ञान के क्षेत्रों में असाधारण प्रगति ,देश में विभिन्न धातक रोगों के सरकारी दावें तथा देश में फैल रहे प्लेग ,तपेदिक, कोढ, स्वाइन फ्लू ,डेंगू, मलेरिया ,वायरल फीवर, एड्स,चर्मरोग, ह्न्दय रोम ,गुर्दा रोग ,कोरोना वायरस आदि की उपस्थिति से निरंतर प्रसार से विश्व सकते में है, दिनोंदिन बढता चला जा रहा है ,इन रोगों के पीछे गन्दगी, गरीबी, आवादी, औद्मौगिकीकरण,वैभव विलासिता, अदूरदर्शी योजनाएं व अव्यवहारिक नीतियां, आपसी सामन्जस्य का अभाव व दृढ इच्छा शक्ति का न होना भी हैं।

भारतीय ऋषि मुनियों के वैदिक चिन्तन पर आधारित यज्ञ मानव समुदाय के लिए महत्वपूर्ण होरहा है। वेदों के परिपेक्ष में यज्ञ वैदिक संस्कृति व आयुर्वेद के प्राण है। वेदों में **'यज्ञौ वै श्रैष्ठतम कर्म'** कहा गया है अर्थात यज्ञ जीवन का श्रेष्ठतम कर्म है, यज्ञ को कर्मकांड की परिधि के साथ वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में देखने की जरुरत है। विभिन्न रोगों की रोकथाम व शारीरिक मानसिक पर्यावरण विशुद्ध करने तथा मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिये यज्ञ थैरेपी या यज्ञ महत्त्वपूर्ण है। यज्ञ से प्रदूषण को अल्प करने तथा वायुमंडल को आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने हेतु किया जाता है अपितु यज्ञ के इस रहस्य के साथ शारिरीक स्वास्थ्य व वातावरण में व्यापक रूप से व्याप्त विभिन्न प्रकार के वायरल ,वैक्टेरियल, फन्गास व शरीर के विभिन्न अंग प्रत्यंगों में व्याप्त रोगों को निष्क्रीय करने की वैदिक दार्शनिक वैज्ञानिक प्रमाणिक विधा भी है।

शरीर को चलाने के लिए रस,रक्त,स्नायु विहीन नाडियां होती है, इसको प्रभावित करने के लिये आधुनिक चिकित्सा में इन्जेक्शन जो इन्ट्रावेनस, सबकुटेनियस, मस्कुलर आदि के द्वारा औषधि के माध्यम से चिकित्सा की जाती है व की जा रही हैं, परन्तु इससे भी कहीं सूक्ष्म वायु में मिश्रित हो कर शरीर में पहुंचाने वाली यदि कोई विधा है तो वह आयुर्वेदीय वैदिक यज्ञ थैरेपी ही है ,यज्ञ का वैज्ञानिक आधार भी यही है कि अग्नि अपने में जलाई गई वस्तु को करोड़ों गुना अधिक सूक्ष्म बना देती है, प्रयोग के रूप में देखें तो एक लाल मिर्च अपने में उतनी तीखी नहीं होती परन्तु अग्नि में डाल कर जलाया जाये तो उसका प्रभाव दूर दूर तक फैलता है।वैज्ञानिक स्तर पर फ्रांस के वैज्ञानिक डा०हाफकिन व डा० कर्नल किंग ने अग्नि के सूक्ष्मीकरण सामर्थ्यसिद्धांत के आधार पर प्रमाणित भी किया है। उन्होने आग में धी जलाने व चावल ,केसर के घूंये से वातावरण की शुद्धता को प्रमुखता से प्रमाणित किया। यही यज्ञ थैरेपी का प्रारम्भिक स्वरूप है।

आयुर्वेदीय यज्ञ से अग्नि में पदार्थ डालने पर स्थूल रूप सूक्ष्म रूप में परिवर्तित हो जाता है व होम द्रव्यों को परमाणु रूप करके वायु व जल के साथ मिलकर शुद्ध करती है, अग्नि में डालने पर सैकड़ों लोगों को प्रभावित करती है। ग्राह्य के गैसिय व्यापनशील नियमके अनुसार निश्चित ताप व दाब पर गैसों की व्यापन गतियाँ उसके धनत्व के वर्गमूल के विपरीत अनुपाती होती है अर्थात गैस जितनी हल्की होगी ,वह उतनी ही शीध्र वायु में मिल सकेगी। इसी को अथर्ववेद में कहा है 'स्वाहा कृतेउर्धवनम्रसं मारूतं गच्छतम्' यज्ञ में स्वाहा पूर्वक आहुति देने से वायु आकाश में व्याप्त होती है। इसी सिद्धांत के आधार पर अग्नि में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म होकर दुर्गन्ध को दूर करता है व शरीर में प्रविष्ट होकर विभिन्न जीवाणुओं से सुरक्षित रखता है ।

यज्ञ में कपूर,आम की समिधा, घृत, हवन सामग्री का प्रयोग किया जाता है, (1) –कपूर आसानी से जलता हुआ अग्नि को प्रज्ज्वलित करने के लिये प्रयोग किया जाता ही, इसका कुछ भाग बिना किसी रासायनिक परिवर्तन के उड जाता है व वायु को सुगंधित करता है ,शेष भाग सुगंध से दुर्गन्ध को छुपाने में सहयोगी होता है ।

(2)–आम या अन्य लकडियाँ जलने पर 500 डिग्री तापांश देता है। लकडी का मुख्य भाग सैलुलोज व लिग्रोसेलुलोज में हाईड्रोजन 47.62 प्रतिशत, कार्वन 28. 57 प्रतिशत, आक्सीजन 23.81 प्रतिशत होती है। सेलुलोज व लिग्रोसेलुलोज के आक्सीजन से हाईड्रोजन बनती है। सैलुलोज व लिग्रोसेलुलोज के साथ पानी मिल कर कार्वनडाईआक्साईड व पानी बनती है। यदि

वायु निकलने का प्रवेश द्वार बन्द हो तो कुछ मात्रा में कार्वनमोनो आक्साइड निकलती है ,इसलिए यज्ञ खुले स्थान पर होना चाहिए जिससे कार्वन मोनोऑक्साइड कम बने व वायु में मिल जाये। यज्ञ कुन्ड की बनावट, समिधाओं की लम्बाई, उसमें रखने की विधि तथा तापांश वायु की समुचित मात्रा देता है, जिससे कार्वनमोनोआक्साईड वायु में विलुप्त हो जाती है,और कोई हानि नहीं होती है,लकडी की आसवन क्रिया से कैल्शियम, पोटैशियम, मैग्नीशियम, एल्मोनियम,लोहा, मैगजीन, सोडियम, फास्फेट, गन्धक बनते है ।

(3)—घृत—ग्लिसराल व कार्वोक्सिलिक अम्लों के मेल से बना है ,इसके जलने से कैप्रोनियम ऐल्डीहाइड, नार्मल आप्टिकल ऐल्डीहाइड तथा कई उडनशील ऐल्डीहाइड व कई वाष्पशील बसीय अम्ल बनते है,जो वातावरण को शुद्ध व सुगंधित करते है।

(4)—हवन सामग्री अग्नि में भलीभांति प्रज्ज्वलित हो जाती है ,इसमें विभिन्न प्रकार की वनौषधियां होती है ,अग्नि में जलने पर वायु में व्याप्त व शरीर में क्रियाशील वायरस व वैक्टेरिया को निष्क्रियता प्रदान करती है ,इससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता का विकास भी होता है,नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है।

यज्ञ पर वैज्ञानिक शोध डब्लू.एच.ओ ने विश्व सर्वेक्षण में स्पष्ट किया है कि मानव जीवन के हितार्थ वैज्ञानिक जगत में आ रही एन्टीवायोटिक का प्रभाव आगे आने वाले समय में प्रभाव हीन हो रहा है,यदि डब्लू.एच.ओ के इस सर्वेक्षण को मान लिया जाये तो आगे आने वाले समय में स्थिति भयंकर हो सकती है ,जो अभी भी विभिन्न वायरस रोगों की चिकित्सा में एन्टीवायोटिक के निष्प्रभावित होने का संकेत दे रही है, इसीलिए वेद में सृष्टि के आदिकाल में ही कहा है आयुर्यज्ञेन कल्पतामजीवन की यज्ञ से रक्षा करो, क्यो की यज्ञ में ही वह शक्तियां है जो सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवाणुओं को निष्क्रिय कर सकती है ,वैज्ञानिकों में डा फुन्दन लाल जी ,डा सत्य प्रकाश सरस्वती ,डा राम प्रकाश ,डा0 टेले ,डा0 टोकीन, राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ ,उ प्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ,डा0 कर्नल हाफकिन,डा0 किंग आदि ने अनेकों प्रयोगों व अनुसंधान ने स्पष्ट किया है कि 'यज्ञ मे डाली गई विभिन्न वनोषधियां सूक्ष्म वायु में मिश्रित हो कर पर्यावरण को विशुद्ध करती है व शरीर को स्वास्थ्य रखती है तथा मनोकामनाओं को पूर्ण करती है। यज्ञ में डाली गई बस्तुयें करोड़ों गुना सूक्ष्म होकर विभिन्न वायरस वैक्टीरिया को निष्क्रिय करके शरीर को खतरनाक वायरस से सुरक्षित करती है,अन्तरिक्ष वैज्ञानिकों ने अपने अनेकों प्रयोगों से यह सिद्ध किया है कि एक दिन यज्ञ करने से 100 यार्ड क्षेत्र में एक माह तक प्रदूषण नहीं हो सकता है ।

इसप्रकार वैज्ञानिकों ने यह भी प्रमाणित किया है कि यज्ञ शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढाते है ,यज्ञ में प्रयोग करने के लिये कपूर ,आम या अन्य समिधाएं, गाय का शुद्ध धृत, हवन सामग्री से वातावरण शुद्ध व शरीर निरोगी व सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती है, यज्ञ खुले स्थान या कमरे में करना हो तो खिडकियां खुली होनी चाहिए तथा दर्शन, श्रवण,गन्ध इन्द्रियों से सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती है, यज्ञ में वेदमंत्रों के उच्चारण से शरीर मैं सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती है। यज्ञ शाला में तावें के पात्र से निकलने वाली तरंगों से सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती है। यज्ञ में विशेष वनौषधियों से बचावरू—वायरल रोगों में निम्न वनौषधियों को एक किलो सामिग्री में मिलाकर दैनिक यज्ञ करने से वातावरण को प्रदूषित होने से बचाता है रू—''गूगल 50ग्राम, सफेद चंदन 25ग्राम, लाल चंदन 25ग्राम, अगर व तगर 50 ग्राम, चिरौजी व खोपड 50ग्राम, नारियल का बुरादा 75 ग्राम, जायफल व लौगं 50 ग्राम, मुन्नक्का 50ग्राम, किशमिश व छुआरा 75 ग्राम , बडी इलायची 50ग्राम, गुलाब के फूल सूखे 50 ग्राम, बडी हर्र 50 ग्राम, गिलोय 100ग्राम , साठी के चावल 50ग्राम, सहदेव व जटामासी व सतावर 100 ग्राम, कूट 50ग्राम, ब्राह्मी 75 ग्राम, काले तिल 75 ग्राम, अश्वगंधा 25 ग्राम, चिरायता 25 ग्राम , हूपकला 25ग्राम सुदर्शन की पत्ते 25 ग्राम 'अतः स्पष्ट है कि वर्तमान परिस्थितियों व परिप्रेक्ष्य मे विभिन्न वायरस, वैक्टेरिया व कोरोना वायरस को वातावरण से समूल नष्ट करने के लिये ऋषि मुनियों के द्वारा प्रतिपादित यज्ञ विधा को सम्पूर्ण विश्व में अपनाना पड़ेगा , घर घर यज्ञ से वातावरण को विशुद्ध करने का प्रयास करें,शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढाये ,मानसिक तनाव को दूर करें ,सकारात्मक सोच उत्पन्न करें, विश्व, देश , समाज,परिवार से को सुख शान्ति सफलता व शारीरिक मानसिक व वातावरण के पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए यज्ञ को जीवन्त करें और मनोकामनाएं की सफलता को गौरवान्वित करें।

आयुर्वेद ज्ञाता वैद्म श्वेत केतु शर्मा, आयुर्वेद शिरोमणि पूर्व सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति भारत सरकार।

ई—मेलः shwetketusharma@gmail.com

निरोगी काया में ही सुख

पिछले अंक का शेष...

-सुरिन्द्र चौधरी

मन, बुद्धि, इन्द्रिय और शरीर का प्रसन्न होना अर्थात स्वस्थ होना ही पुष्ट करता है कि मनुष्य को सुख प्राप्त हो रहा है। ऐसे में कौन नहीं चाहेगा है कि उसका शरीर पूर्णरूप से स्वस्थ व निरोगी हो, मां प्रकृति भी ऐसा ही चाहती है, शायद इसीलिए उसने शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए अनेकों पुष्टिकारक, बलवर्धक पदार्थ एवं संसाधन उपलब्ध कराए है। सभी को नीरोग और स्वस्थ रखना प्रकृति का स्वाभाविक गुण है। हमारे पूर्वज प्रकृति से पूरी तरह से जुड़े हुए थे, इसलिए उन के लिए स्वस्थ जीवन व्यतीत करना सहज, सरल एवं स्वाभाविक था। परन्तु आज हम जैसे-2 प्रकृति से दूर होते जा रहे है, उतना ही हम रोगों के समीप होते जा रहे है। हम सब जानते है कि हमें सहज रूप से स्वस्थ रहने के लिए प्रकृति से जुड़ना होगा और उसके सभी नियमों को अपने जीवन का अभिन्न बनाना होगा और हम सभी सुखी होने के लिए ऐसा ही करना भी चाहते है, पर केवल चाहने भर से सब कुछ नही हो जाता है, उसके लिए प्रयास करने पड़ते है। परन्तु आज हम में से अधिकांश की ऐसी परिस्थिति है कि सभी स्वस्थ रहना तो चाहते है पर प्रयास के नाम पर शून्य बट्टा शून्य, इसलिए परिणाम में मिलता है रोगों से ग्रसित एक शरीर। हमारी विफलताओं में प्रयासों का अभाव तो रहता ही है, साथ ही जानकारी का अभाव भी होता है। हमारे पास अरोग्य प्राप्ति के लिए उचित और पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए क्योंकि अनुचित जानकारी का होना, जानकारी न होने से अधिक नुकसानदायक होता है। शरीर को निरोगी बनाने के लिए सम्बन्धित उचित जानकारी के बारे में कुछ भी जानने या बताने की प्रक्रिया को प्रारम्भ करने से पहले यह जानने का प्रयास करते है कि निरोगी शरीर का आध्यात्मिक जीवन में कितना महत्व है क्योंकि जब आध्यात्मिकता के लिए निरोगी शरीर का महत्व स्पष्ट हो जायेगा तो हमें अपने शरीर को स्वस्थ और निरोगी रखने की ऐसी अडिग प्रेरणा मिलेगी कि हम शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भरपूर प्रयास किए बिना नहीं रह सकेंगे।

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपायाऽनेन जपोपासनादि-कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।।

हे ईश्वर दयानिधे ! आपकी कृपा से जो-जो जाप उपासना आदि उत्तम काम हम लोग करते हैं वे सब आपको समर्पण हैं। जिससे हम लोग आपको प्राप्त हो सकें। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पदार्थो की सिद्धि हम लोगों को शीघ्र होवें।

उपरलिखित प्रार्थना में चार पदार्थो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की शीघ्र सिद्धि की बात की गई है। इस समर्पण वाक्य में जीवन के अन्तिम लक्ष्य अर्थात मोक्ष तक चारों सोपान का वर्णन होने के बाद भी कुछ अधूरा सा लग रहा है। और वह अधूरापन है इन सिद्धियों की प्राप्ति और भोग में सहायक शरीर की स्वस्थता। यह बात भलीभांति हम सब के मन में कही न कही छिपी हुई है कि हम इन सिद्धियों का उपयोग तो तभी कर पाएगें जब हम स्वस्थ होंगे अर्थात निरोग होंगे, इसी बात की पुष्टि निम्नलिखित श्लोक द्वारा की गई है।

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्।
रोगास्तस्यापहर्तारः श्रेयसो जीवितस्य च।।

च. स. 1/15

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थो का मूल कारण आरोग्य ही है। रोग इस आरोग्य, अभ्युदय एवं जीवन (आयु) को नाश करने वाले है। एक श्लोक में ही कितने सुन्दर ढंग से स्पष्ट किया है कि सारी सिद्धियों के मूल में शरीर की निरोगिता ही है अर्थात निरोगी शरीर के बिना हम इन सिद्धियों को भोगने के बारे में तो तब सोचेंगे, जब हम निरोगी शरीर के बिना हम इन सिद्धियों को प्राप्त करने में सफल हो पाएंगे। मनुष्य का शरीर स्वस्थ होने पर ही अमूल्यवान और अनुपलब्ध इच्छित

साधनों की प्राप्ति कर सकता है और शरीर के स्वस्थ होने पर ही सभी साधन उपयोगी होकर सुख का कारण बनते है अन्यथा सब कुछ मिट्टी के ढ़ेले के समान है। इसीलिए इस संसार में सभी स्वस्थ रहते हुए समस्त इच्छित साधनों की प्राप्ति और उनका उपयोग करना चाहते है अर्थात सुखी होना चाहते है। अब जब यह तो निर्णय हो ही गया है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साथ-2 शरीर की निरोगिता भी महत्वपूर्ण है। धर्मपरायण लोग भी शरीर को ही धर्म आदि का मुख्य साधन समझते है। यहां भी शरीर का तात्पर्य निरोगी शरीर से है। इतनी चर्चा के बाद शरीर को निरोगी बनाने की चाह असीमता की सारी हदें पार करने को आतुर हो रहीं है कि हम सारी जानकारियों को आज ही प्राप्त करलें और उन जानकारियों में बताये गए सभी सम्भव प्रयासों को करके आज ही शरीर को निरोगी बना सकें। भावावेश में हम यह भी भूल जाते है कि शरीर के इन रोगों से हमारा कितना पुराना रिश्ता है, हम ने खुद ही इनको अपने ही हाथों से पोषित किया है। हम ने इन रोगों को जिगर के टुकड़ों से भी बेहतर लालन पोषण किया है, अपने बन्धुओं से भी ज्यादा प्यार दिया है, चाहे यह सब अज्ञान वश और अन्जाने में किया गया है। बेशक हमारी स्वस्थ होने की चाह अपने असीम पर है फिर भी हमारी निरोगी होने की चाह तभी पूरी हो पाएगी जब हम यह जानते होंगे कि निरोगिता किसे कहते है अर्थात निरोगी शरीर की पहचान क्या है? यदि ऐसा नहीं किया गया तो हमारे जो अंग आज रोगग्रसित नहीं है, उनको भी रोगग्रस्ति होने में समय नहीं लगेगा। अब एक भी कदम आगे बढ़ाये बिना अपने आप को यहीं रोककर जानते है कि निरोगी शरीर की क्या पहचान है?

विकारो धातुवैषम्यं, साम्यं प्रकृतिरुच्यते।
सुखसंज्ञकमारोग्यं, विकारो दुःखमेव च।।

च.स. 9/4

शरीर के धातुओं (वात, पित्त और कफ) का विषम स्थिति में होना ही विकार अर्थात रोग कहलाता है और धातुओं का साम्य अर्थात अनुकुल स्थिति में होने का नाम प्रकृति कहा जाता है। अरोग्यता ही सुख है, रोग का होना दुःख है। वैद्यक शास्त्र में आरोग्यता को ही सुख कहा गया है और शरीर में सभी प्रकार के रोग, चाहे छोटा हो या बड़ा, चाहे शरीरिक हो या मानसिक, को दुःख कहा गया है। शरीरिक रोगों का सम्बन्ध शरीर के भौतिक अंगों से होता है और मानसिक रोगों का सम्बन्ध मन से होता है। मानसिक रोगी भ्रम की स्थिति में रहता है, वह भयभीत रहता है, और असामान्य कार्य करने लगता है यथा व्यर्थ की बातों पर चिन्तन करने लगता है, प्रिय को अप्रिय और नित्य को अनित्य मानने लगता है, इच्छा अनिच्छा में बदल जाती है, अपवित्र एवं असाजिक आचरण करने में संकोच नहीं करता है। स्मृति निरन्तर शून्यता की ओर अग्रसर होती है। क्रोध करने की प्रवृति प्रबल होती जाती है।

लोक व्यवहार में भी सामान्यतः जिस व्यक्ति के शरीर में कोई रोग न हो उसे निरोग कहा जाता है अर्थात उसे स्वस्थ कहा जाता है। निरोगिता को परिभाषित करते हुए सुश्रुताचार्य लिखते है, जिस मनुष्य के वात आदि दोष, अग्नि, धातु और मल समान हों, जो मनुष्य अपने शरीर की क्षमता के अनुसार पूर्ण कार्य कर सकता हो, जिसका शरीर, जिसकी इन्द्रियाँ और जिसका मन प्रसन्न हो, श्वास एवं स्वेद गंधरहित हो, वही मनुष्य स्वस्थ कहलाने का अधिकारी है। जिस पर ''पैर गरम, पेट नरम, सिर ठंडा, डाक्टर को मारो डंड़ा'' लोकोक्ति चरितार्थ होती हो, अर्थात जिस व्यक्ति का पेट नरम, पैर गरम और सिर ठंडा रहता हो, उसे डाक्टर की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि यह सब स्वस्थतता की निशानियां बताई गई है। संसार में निरोग रहने के बराबर कोई सुख नहीं है। व्यक्ति निरोगिता के अभाव में कोई भी कार्य करने में असक्षम होता है। रोगी व्यक्ति को कुछ भी अच्छा नहीं लगता है, न उसे कुछ खाना भाता है, न ही उसे किसी से बात करना अच्छा लगता है। संसार में जितने भी सुख है, उन सब में से निरोगिता का सुख प्रधान है क्योंकि निरोगिता के अभाव में सभी सुख, चाहे धन का सुख हो, चाहे सन्तान का सुख हो और चाहे स्त्री का सुख हो, सभी व्यर्थ लगते है। कौन ऐसा मूर्ख होगा, जो प्रधान सुख अर्थात निरोगिता की रक्षा नहीं करना

चाहेगा, फिर भी आज की भागदौड़ मे उलझा इंसान भौतिकता अर्थात पैसे को ही सर्वोपरि मान रहा है और फलस्वरूप आज के समय में हम में से ज्यादातर औषधियों के सहारे जीवन जीने को बाध्य हो चुके है क्योंकि हम ने किसी न किसी रोग को अपने शरीर में आश्रय दे रखा है। किसी किसी ने तो अपने शरीर को रोगों की धर्मशाला ही बना रखा है जहां एक रोग के प्रस्थान से पूर्व ही या रोग के प्रस्थान करते ही दूसरा रोग अपना बसेरा बना लेता है। आश्चर्य की बात यह है कि रोग पीड़ित होने वाले केवल वृद्धजन ही नहीं है अपितु यौवन की दहलीज पर पैर रखने के साथ ही रोगों की क ख ग सीखने वाले तो बहुत है ही, उन युवाओं की संख्या भी कम नहीं है जो कि अपनी जवानी में ही रोगों की पूरी वर्णमाला सीख चुके है। आज पैरासिटामोल, क्रोसीन जैसी सामान्य रोगप्रतिरोधक दवाईयों का सेवन तो लगभग सभी कर रहें, कुछ मैटफारमिन, इनवोकारमैट, एलडोरिड, टिमोलोल जैसी दवाईयों का सेवन मधुमेह और रक्तचाप नियन्त्रण के लिए निरन्तर कर रहे है और कुछ तो डैकटीनोमाइसीन, पैनोबीनोस्टैट जैसी कैंसर रोगप्रतिरोधक दवाईयों का सेवन करके जीवन यापन करने को बाध्य है। आज का युवा लापरवही के कारण रोगों से ग्रस्ति होकर इतना परेशान हो चुका है कि उसके मन में प्रसिद्ध शायर उस्ताद जौक की निम्न रचना का ख्याल आता है, जिन्होंने कहा है –

अब तो घबराकर ये कहते है कि मर जाएंगे।
मर के भी चैन न मिला तो किधर जाएंगे।।

आज के समय में जब एक तरफ अपने आप को 97वें वर्ष का युवा कहने वाले महाशय धर्मपाल जी स्वस्थ एवं सक्रिय जीवन जीतें हुए हमें निरोगी रहने के लिए प्रेरित कर रहें है, दूसरी और हम में से अधिकांश अधेड़ता की दहलीज में कदम रखने से पहले ही किसी एक या अधिक रोग से ग्रसित है तो ऐसे में यह जानना आवश्यक हो रहा है कि हम भी जीवन के अन्तिम पड़ाव तक स्वस्थ एवं सक्रिय जीवन कैसे जी सकते है। हम एक ऐसा जीवन जीने में कैसे सफल हो पायेंगे जिसमें कोई भी रोग हमारे शरीर में प्रवेश न कर सकें और यदि किसी कारण से हम रोग ग्रसित हो भी जाये तो कैसे इन रोगों का निदान करके पुनः आरोग्यता को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे ? रोग मुक्त जीवन और रोगों के निदान की चर्चा का औचित्य नहीं रहेगा यदि हमें शरीर की संरचना, रोगों एवं रोगों के निदान का ज्ञान देने वाले आयुर्वेद का ज्ञान नहीं होगा। चरक संहिता के निम्नलिखित श्लोक में इसी बात की पुष्टि की गई है कि अरोग्यता के लिए ज्ञान का होना अवश्यम्भावी है।

समग्रं दुःखमायत्तमविज्ञाने द्वयाश्रयम्।
सुखं समग्रं विज्ञाने विमले च प्रतिष्ठितम्।।

च.स.30/83

शरीरिक और मानसिक दुख ज्ञान के अभाव से होते है। शरीर और मन से सम्बन्धित ज्ञान न होने पर सभी रोग उत्पन्न होते है। जब इन दोनों का विशुद्ध ओर पूर्ण भान हो जाता है तब सुख-अरोग्य सम्पूर्ण रूप में प्राप्त होता है। ऋग्वेद के निम्नलिखित मंत्र से भी यहीं स्पष्ट होता है कि शरीर को रोग रहित रखने के लिए ज्ञान का होना अति आवश्यक है।

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः।
आरे देवा द्वेषा अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये॥

ऋ. 10.63.12

हे देवों ! आप अपने ज्ञानोपदेश से रोगों को हमारे से दूर कीजिए अर्थात हम आप से प्राप्त ज्ञान को अपने व्यवहार में लाकर शरीर को रोगरहित बना सकें। हमारे में सभी यज्ञों को करने की भावना सदा बनी रहें, हम में सदैव विद्वानों को पुकारने की भावना भी बनी रहें, उनके सम्पर्क में रहकर हम ज्ञान प्राप्त करते रहें जिससे हमारा शरीर स्वस्थ रह सकें। हम से दान न देने की भावना को भी दूर कीजिए। किसी का अहित, अशुभ चाहने वाली दुर्बुद्धि को हम से दूर करें, ईर्ष्या-द्वेष की भावना हमारे मन के समीप न पहुंच सकें और इस प्रकार हमें असीम सुख को प्राप्त कराइए।

ए-2/79, सैक्टर 5, रोहिणी,
दिल्ली 110085
मो. : 9212066425

हँसना भी जरूरी है सेहत के लिए

☺ मुरली (बेटे से)– मेरी ख्वाहिश है कि तू बड़ा होकर वकील बने।
बेटा– क्यों ?
कंजूस मुरली– ताकि मेरा काला कोट तुम्हारे काम आ जाए।

☺ पड़ोसन– बहन, नया हार तो बहुत अच्छा है, कितने का पड़ा ?
श्रीमती मुरली– ज्यादा नहीं, दो दिन की लड़ाई, एक दिन की भूख हड़ताल, 2 दिन का मौन व्रत और थोड़ा रोना धोना।

☺ डॉक्टर – आपका लड़का पागल कैसे हो गया ?
मुरली– वो पहले जनरल बोगी में सफर करता था।
डॉक्टर – तो इससे क्या ?
मुरली– लोग बोलते थे थोड़ा खिसको, थोड़ा खिसको, तभी से खिसक गया।

☺ मुरली– पढ़ ले नालायक, कभी तूने इन छुट्टियों में अपनी कोई बुक खोलकर भी देखी है.
बेटा– हां पापा देखी है, बल्कि रोज सब काम छोड़कर देखता हूं।
मुरली– कौन सी बुक पढ़ने लगा है तू ?
बेटा–..फेसबुक।

☺ पड़ोस की एक स्त्री दही जमाने के लिए जाम लेने आई। उस समय सास बाजार गई थी, बहू ने कहा – दही नहीं है, कल हमने कढ़ी बना ली।
वह स्त्री वापस जा रही थी कि रास्ते में सास मिल गई, उसने सास को बताया – तुम्हारे घर दही लेने गई थी, तुम्हारी बहू ने बताया कि दही खत्म है क्योंकि कल कढ़ी बना ली।
सास –अच्छा ? उसकी ये मजाल ! तू मेरे साथ चल !
घर आकर सास ने उससे कहा – बहन कल हमने सारे दही की कढ़ी बना ली।
हैरान परेशान उस स्त्री ने पूछा– ये बात तो तुम्हारी बहू ने भी कही थी, फिर मुझे वापस क्यों लाई ?
सास – कल की आई बहू कौन होती है मना करने वाली। मना करना है तो मैं करुंगी।

☺ पप्पू– यार ये शादी क्या होती है ?
मुरली– शादी बिजली के दो तारों का वह गठबंधन है। जो सही जुड़ गया तो प्रकाश ही प्रकाश और गलत जुड़ गया तो धमाके ही धमाके। हर रोज धमाके।

संकलनकर्ता – सुधीर कुमार, झारखंड

समाचार दर्पण

यज्ञ ही क्यों? नामक पुस्तक का विमोचन

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने लाल किशन चन्द आर्य सेवान्यास द्वारा प्रकाशित यज्ञ ही क्यों ? नामक पुस्तक का विमोचन करते हुए कहा कि भवन की सार्थकता भावना से है, गृह की सार्थकता गृहिणी से है होम की सार्थकता होम (हवन) से है। अंग्रेजी में घर को HOME कहा जाता है, कौन नहीं चाहता है कि घर में पावनता हो यज्ञ से पावनता प्राप्त होती है तो वास्तव में होम के बिना कोई HOME बन ही नहीं सकता। न्यास के संयोजक श्री सतीश कुमार आर्य जी साधुवाद के पात्र है। जिन्होंने इस पुस्तक को प्रकाशित कर नि:शुल्क वितरण किया।

संवाददाता अध्यात्म पथ

यज्ञ क्यों ? पुस्तक का विमोचन करते हुए वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी, श्री पी. डुडेजा जी एवं श्री सतीश आर्य जी।

प्रभु का सहारा

प्रस्तुति- अश्विनी नांगिया

तर्ज–आवाज देके हमें तुम बुलाओं

प्रभु के बराबर सहारा नहीं है।
हितु और कोई हमारा नहीं है। प्रभु के ...

हैं तब तक घिरीं ये ग़मों की घटाएँ
हुआ उसका जब तक इशारा नहीं है। प्रभु के ...

उसे भूल जाएँ तो हम भूल जाएँ
कभी उसने हम को बिसारा नहीं है। प्रभु के ...

चलो प्रेम से उसकी गोदी में बैठो
वह सब का पिता क्या तुम्हारा नहीं है। प्रभु के ...

भला हो बुरा हो मगर कौन है जो
पिता के लिए पुत्र प्यारा नहीं है। प्रभु के ...

भले ही यह माने कोई या न माने
बिना उसके जग में गुज़ारा नहीं है। प्रभु के ...

समय है तू आजा प्रभु की शरण में
'पथिक' और कोई भी चारा नहीं है। प्रभु के ...

वैदिक विचारधारा की अत्यन्त लोकप्रिय मासिक पत्रिका 'अध्यात्म पथ' के सदस्य बनकर मानव कल्याण में सहयोग प्रदान करें।

संरक्षक सदस्य	-	**5100/ रुपये**
आजीवन सदस्य	-	**1100/- रुपये**

सम्पर्क सूत्र
अध्यात्म पथ (मासिक)
फ्लैट नं. सी-1, पूर्ति अपार्टमेंट
(F ब्लाक) विकासपुरी, नई दिल्ली-18
मो.: 9810084806
E-mail : adhyatmapath@yahoo.com

प्रेम

श्रीमती पूनम नांगिया

प्रेम है जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई
प्रेम नहीं सिर्फ एक भावना
प्रेम है अस्तित्व जीवन की शक्ति का
प्रेम से बड़ी ना कोई है गहराई

प्रेम क्षमता है हमारे त्याग की
हमारी श्रद्धा और विश्वास की
प्रेम दर्शाता है कर्तव्य को
ना कोई अधिकार जताता है।

ना कोई संदेह ना शुभा कोई
बस हिस्सा अपना सा हो जाता है।
स्वच्छन्द है स्वतन्त्र है इसकी गरिमा
सम्पूर्ण समर्पण यह कर जाता है

प्रेम स्वभाव है जीवन अन्तरम का
ना ऊपरी कोई दिखावा है
ना कोई यत्न ना कोई है प्रयत्न
प्रेम सहज है खुद में ही समाया है

प्रेम सफलता प्रेम प्रसन्नता
प्रेम सज़गता प्रेम सुन्दरता
प्रेम हमारी मन की अर्न्तदृष्टि है
प्रेम से भरी ये सारी सृष्टि है।

खुद ही खिलता फूल प्रेम का
जब फलित होती गुरू कृपा
अनन्त हो उठती चेतना मन की
आनन्द ही आनन्द हो जाता है

ब्रह्माण्ड बना है प्रेम तत्व से
सागर के तल पर फैलता प्रेम
धरती को करता पोषित प्रेम
विशाल नभ की ओर बढ़ता जाता प्रेम
है असीम आदि और अनन्त प्रेम

अध्यात्म पथ (पंजी.)

कार्यालय: WZ-97, सुन्दर पैलेस, ज्वाला हेड़ी मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063
पत्राचार एवं संपादकीय कार्यालय: फ्लैट नं. C-1, पूर्ति अपार्टमेन्ट (F-ब्लॉक) विकासपुरी, नई दिल्ली-18
दूरभाष : 9810084806, 7838915996 **E-mail : adhyatmapath@yahoo.com**

वैदिक विचारधारा की लोकप्रिय मासिक पत्रिका 'अध्यात्म पथ' के यशस्वी सम्पादक आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी के स्वर्ण जयन्ती (50वीं वर्षगांठ) महोत्सव के अवसर पर भव्य विशेषांक हेतु विज्ञापन की अपील

माननीय

सादर नमस्ते!

प्रभु कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

हर्ष का विषय है कि प्रख्यात युवा वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के स्वर्ण जयन्ती (50वीं वर्षगांठ) महोत्सव के अवसर पर भव्य अभिनन्दन स्मारिका का प्रकाशन अध्यात्म पथ के विशेषांक के रूप में यथाशीघ्र किया जा रहा है। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विद्वान्, चिन्तकों के लेख प्रकाशित किए जाएंगे। प्रस्तुत विशेषांक संग्रहणीय होगा तथा इसमें आचार्य श्री के लेख, विचार, कविताएँ आदि भी रहेंगी। कहने की आवश्यकता नहीं कि विगत 35 वर्षों से शास्त्री जी धर्म, समाजसेवा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार में एकनिष्ठ भाव में संलग्न है। देश में ही नहीं विदेश में भी उन्होंने वैदिक ध्वज को उन्नत किया है।

यह पत्रिका देश-विदेश में अध्यात्म एवं सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों में रचनात्मक और सक्रिय भूमिका निभा रही है। शिक्षा से जुड़े विद्वान भी इसमें संबद्ध है। आर्यसमाज के संदेश को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए एक सशक्त माध्यम है यह अध्यात्म पथ पत्रिका।

कृपया इस विशेषांक के लिए अपनी संस्था एवं आर्यसमाज की ओर से शीघ्र ही विज्ञापन देकर अध्यात्म एवं समाज के विकास में अपना योगदान दें।

आप अपने क्रास चेक/ड्राफ्ट 'अध्यात्म पथ' के नाम से (संपादकीय कार्यालय के पते फ्लैट नं. C-1, पूर्ति अपार्टमेन्ट (F-ब्लॉक) विकासपुरी, नई दिल्ली-18) पर भिजवाकर कृतार्थ करें। आचार्य श्री के सम्बन्ध में लेख, शुभकामना संदेश का भी स्वागत है।

विज्ञापन सामग्री एवं डिजाइन यथाशीघ्र भिजवा देवें।

विज्ञापन की दरें इस प्रकार है।

कवर पृष्ठ 4, फोर कलर	- 31000 रुपये	पूरा पृष्ठ अंदर (श्वेत एवं श्याम)	- 3100 रुपये
कवर पृष्ठ 3, फोर कलर	- 21000 रुपये	आधा पृष्ठ अंदर (श्वेत एवं श्याम)	- 1500 रुपये
कवर पृष्ठ 2, फोर कलर	- 21000 रुपये	फोर कलर में अपना फोटो नाम वह	
भीतर पूरा पृष्ठ फोर कलर	- 5100 रुपये	हार्दिक शुभकामनाएं	- 1000 रुपये
अन्दर हाफ पृष्ठ फोर कलर	- 4100 रुपये		

आशा है कि वैदिक, आध्यात्मिक और सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में योगदान देने के लिए आपका विज्ञापन सहयोग अवश्य प्राप्त होगा।

सधन्यवाद!

निवेदक:

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया डी.लिट्
पूर्व प्रो. एवं अध्यक्ष भावनगर यूनिवर्सिटी,
(संरक्षक-अध्यात्म-पथ)

यशपाल आर्य
चेयरमैन, शिक्षा समिति
(संरक्षक-अध्यात्म-पथ)

ओम सपरा
स्पेशल मेट्रो पोलिटेन मजिस्ट्रेट
साहित्य सम्पादक

प्रिं अरुण आर्य
प्रधान, आर्यसमाज सरस्वती विहार,
दिल्ली (संरक्षक-अध्यात्म-पथ)

हीरालाल चावला
उपाध्यक्ष-वेदसंस्थान
(संरक्षक-अध्यात्म-पथ)

डॉ. विनोद बब्बर
सम्पादक-राष्ट्र किंकर
(अतिथि सम्पादक-अध्यात्म-पथ)

अश्विनी कुमार नांगिया
(प्रबन्ध सम्पादक-अध्यात्म-पथ)

सुरिन्द्र चौधरी
मंत्री आर्यसमाज सै.-5, रोहिणी
(अतिथि सम्पादक)

नरेन्द्र आर्य सुमन
प्रधान, आर्यसमाज
रमेश नगर दिल्ली
(अतिथि सम्पादक-अध्यात्म-पथ)

आर्यसमाजों एवं डी.ए.वी. के शिक्षण संस्थाओं से अपील

'अध्यात्म पथ' वैदिक विचार धारा को आगे बढ़ाने वाली लोकप्रिय मासिक पत्रिका है, इसमें आर्यसमाजों एवं आर्य जगत से सम्बद्ध समाचारों को वरीयता दी जाती है।

आत्मोकर्ष दृष्टि से इस पत्रिका का विशिष्ट महत्व है। इसके एक अंक के प्रकाशन पर लगभग 15 हजार रुपये व्यय होते हैं। अपनी उदारता का परिचय देते हुए यदि विभिन्न आर्यसमाज इसके प्रकाशन के एक-एक अंक का व्ययभार वहन कर लें तो पत्रिका निरन्तर प्रकाशित होती रहे।

जो आर्यसमाज एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाएँ किसी एक अंक के प्रकाशन पर सहयोग राशि प्रदान करेगी उस आर्यसमाज एवं शिक्षण संस्था का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए उसकी गतिविधियों के 1 पृष्ठ का विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जाएगा। तथा उसे यह पत्रिका नि:शुल्क प्रेषित की जायेगी। आपके सकारात्मक सहयोग की प्रतीक्षा है।

निवेदक

प्रि. अरुण आर्य — श्री अशोक सुनेजा

श्री यशपाल आर्य — श्री अश्विनी नांगिया

सम्पूर्ण जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
फ्लैट नं. सी-1, पूर्ति अपार्टमेंट
(एफ-ब्लाक), विकासपुरी, नई दिल्ली-18
मो. : 9810084806

परिवार समाज एवं धर्म के उत्थान के लिए चिरन्तन मूल्यों की प्रेरक पत्रिका-

'अध्यात्म पथ' के सदस्य बनें।

सदस्यता शुल्क :

मुख्य संरक्षक	: रु 21000/-		
संरक्षक	: रु. 5100/-	वार्षिक	: रु 100/-
आजीवन	: रु 1100/- 10 वर्षों के लिए	एक प्रति	: रु 10/-
पंचवार्षिक	: रु 500/-	विदेश में	
त्रैवार्षिक	: रु 270/-	आजीवन	: 350 डॉलर, यूरो
द्विवार्षिक	: रु 190/-	वार्षिक	: 20 डॉलर, यूरो

सदस्यता आवेदन पत्र

(नाम, पता तथा पिन कोड, फोन नम्बर, निम्न फार्म में साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।)

नाम .... उम्र............................ दिनांक..............................

पता ....

शहर .... राज्य .... पिन ....

फोन .... मोबाइल ....

चैक/मनीऑर्डर/डी.डी. नम्बर .... रुपये ....

संरक्षक/ आजीवन/पंचवार्षिक/वार्षिक की सदस्यता हेतु संलग्न है।

भवदीय

चैक/ ड्राफ्ट/ मनीआर्डर 'अध्यात्मपथ' के नाम से अध्यात्म पथ सम्पादकीय कार्यालय,
फ्लैट नं. सी-1, पूर्ति अपार्टमेंट (एफ-ब्लाक) विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 के पते पर भेजें।

अध्यात्म पथ मासिक पत्रिका के द्वारा दिल्ली में आयोजित विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ, विराट भजन संध्या एवं सम्मान समारोह की सचित्र झलकियाँ

डॉ. पुष्पलता वर्मा जी एवं श्री जे.बी. सिंह जी को सम्मानित करते हुए आर्य तपस्वी सुखदेव जी एवं श्रीमती मीना आर्या जी

परम याज्ञिक श्री संजय सेतिया जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करती हुई दर्शनाचार्या विमलेश बंसल जी एवं श्रीमती सरोजिनी जौहर जी को सम्मानित करती हुई श्रीमती स्वर्णा सेतिया जी

धर्मनिष्ठ श्री सोहनलाल आर्य जी के प्रपौत्र अथर्व आर्य को सम्मानित करते हुए बाएं से श्री सत्यानंद आर्य जी, अथर्व के पिता श्री आशीष आर्य जी (ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट, प्रथम श्रेणी), माता श्रीमती शैरिन आर्या जी, बहन श्रुतिका एवं दादा श्री सोहनलाल आर्य जी

सुप्रसिद्ध योगाचार्य एवं स्वर्ण पदक विजेता श्री कृष्ण कुमार गर्ग जी अदभुत योगासन का प्रदर्शन करते हुए।

वैदिक विचारधारा की अत्यन्त लोकप्रिय मासिक पत्रिका के विशेषांक को लोकार्पण करते हुए गणमान्य महानुभाव एवं आर्य महिलाएँ

शेष चित्र अगले अंक में

RNI No/DELMUL/2006/18533 Date of Publication 06-06-23 DL(W)10/2145/2023-2025
Posted at - NIEHO
Date of Posting 12 & 13 June, 2023

Putting your thoughts into print !

BRANDGATE

a brand *Communication* house !

Now Equipped With State of The Art Automatic Box Making Machines

Please Contact For Designer Boxes For Cosmetic Packaging, Gift Packaging, Clothes Packaging, Mobile & Mobile Accessories Packaging, Bakery Items Packaging, Sweet, Dry Fruit Packaging And All Other Customized Packaging

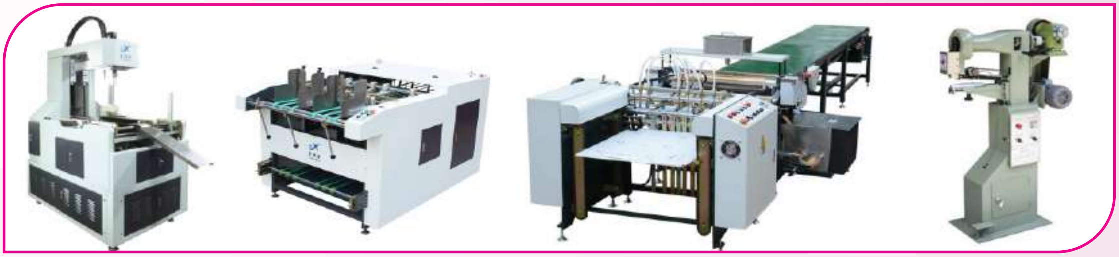

D 42, DSIDC Complex, Kirti Nagar, New Delhi-110015
Mobile : +91 9810 670015, +91 9810 330414

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक चन्द्रशेखर शास्त्री द्वारा एक्स्पो प्रिंट एण्ड मीडिया प्रा0 लि0, 97/12, ज्वाला हेड़ी मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली - 63
से मुद्रित तथा अध्यात्म पथ कार्यालय : WZ-97, सुन्दर पैलेस, ज्वाला हेड़ी मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63 से प्रकाशित